सचित्र बाल कथाएँ

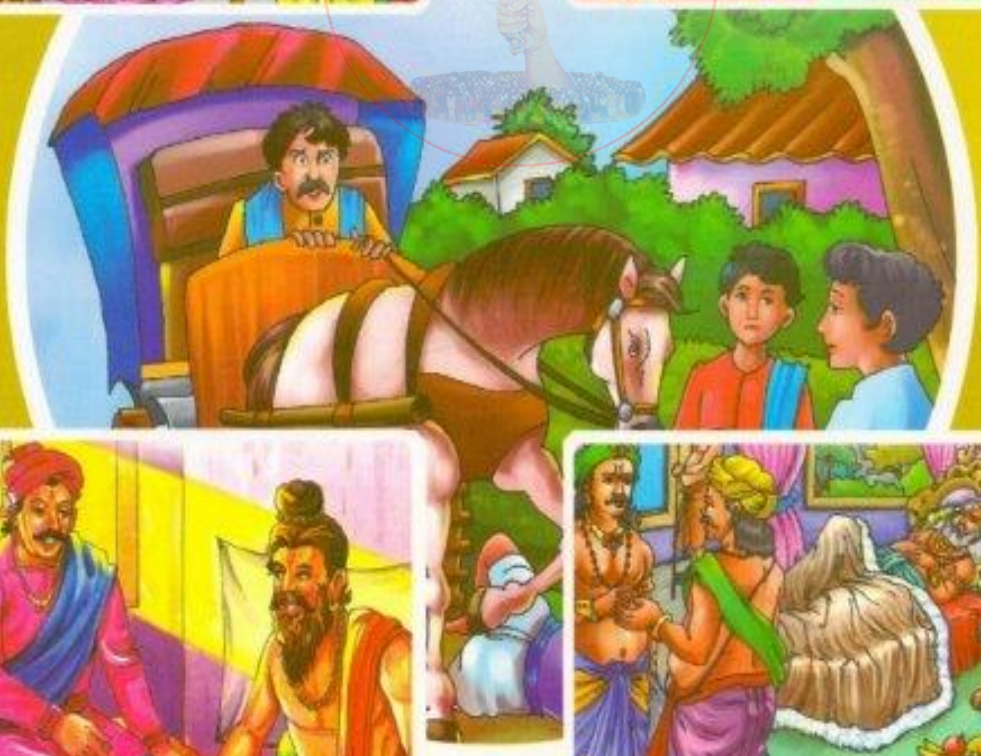

समय की कीमत

6

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

सादगी की गरिमा

भारत के प्रथम राष्ट्रपति स्व० श्री राजेंद्र प्रसाद ने प्रेसीडेंसी कालेज में प्रवेश लिया। सादगी उनके व्यक्तित्व की अपनी एक महती विशेषता थी। जब पहले दिन वे कक्षा में गए तो कुर्ता, पाजामा और टोपी पहने हुए थे। शेष सब लड़के कोट, पतलून तथा टाई में थे।

वे सब लड़कों को देखकर समझे कि इनमें अधिकांश एंग्लो इंडियन होंगे और उन्हें देखकर कक्षा के सब लड़कों ने उनका बहुत मजाक बनाया। जब कक्षा में प्राध्यापक आए और सबका नाम व परिचय एकदूसरे को मिला तो दोनों ही आश्चर्य में थे।

www.awgp.org

राजेंद्र बाबू को आश्चर्य हुआ कि सभी विद्यार्थी भारतीय ही थे। विद्यार्थी आश्चर्य में थे कि राजेंद्र बाबू ने, जिन्हें वे निरा गँवार ही समझ रहे थे, विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया था। विद्यार्थी आश्चर्यचकित थे उनकी सादगी तथा भारतीय वेशभूषा में छिपी ज्ञान-गरिमा पर। उन्होंने फिर कभी मजाक नहीं बनाया। यही राजेंद्र बाबू आगे चलकर भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने।

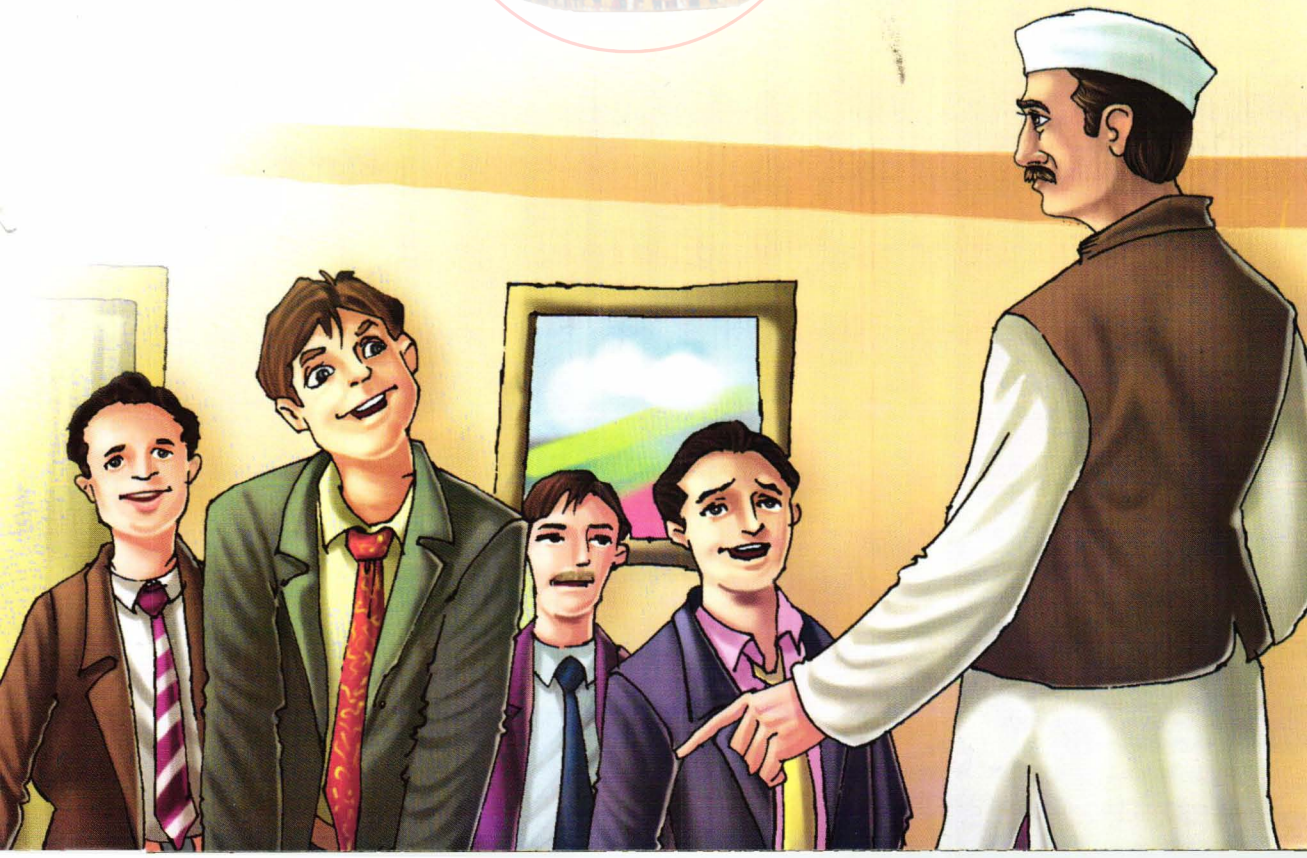

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संगति का प्रभाव

मिथिला के सम्राट चमूपति अपने पुत्र राजकुमार श्रीवत्स की उद्दंडता से बड़े खिन्न थे। राजकुमार गुरुकुल से लौटकर आने के कुछ दिनों तक तो ठीक रहे। पुनः स्वभाव उग्र होता चला गया। उनके व्यवहार में कुलीनता कहीं से नहीं टपकती थी। सोचा गया कि संभवतः विवाह से समस्या का हल हो। पर स्थिति यथावत ही रही।

राजा मन बदलने की इच्छा से महर्षि श्यावाश्व के वाजिमेध यज्ञ का आमंत्रण आने पर प्रमुख यजमान के रूप में रवाना हुए। रास्ते में प्रथम विराम उन्होंने जहाँ किया, वहाँ संयोगवश अरण्यजैत के खूँखार दस्यु नायक का कार्यक्षेत्र था। अर्द्धनिद्रा की स्थिति में राजा ने सुना, एक नन्हा सा तोता कह रहा था—"तात, आज बहुत अच्छा शिकार हाथ लगा है। महाराज हैं तो क्या हुआ? तुरंत सिर धड़ से अलग करो और एक ही दांव में जीवन भर का हिसाब-किताब पूरा कर लो।"

नीति वचन याद कर महाराज ने तुरंत वह स्थान छोड़ दिया। अगले दिन प्रातः वे महर्षि के आश्रम में पहुँचे। उनका स्वागत यहाँ भी पुनः एक शुक की मंगल-ध्वनि ने किया—"आइए महाराज! आपका इस आश्रम में स्वागत है। आप हमारे आज के

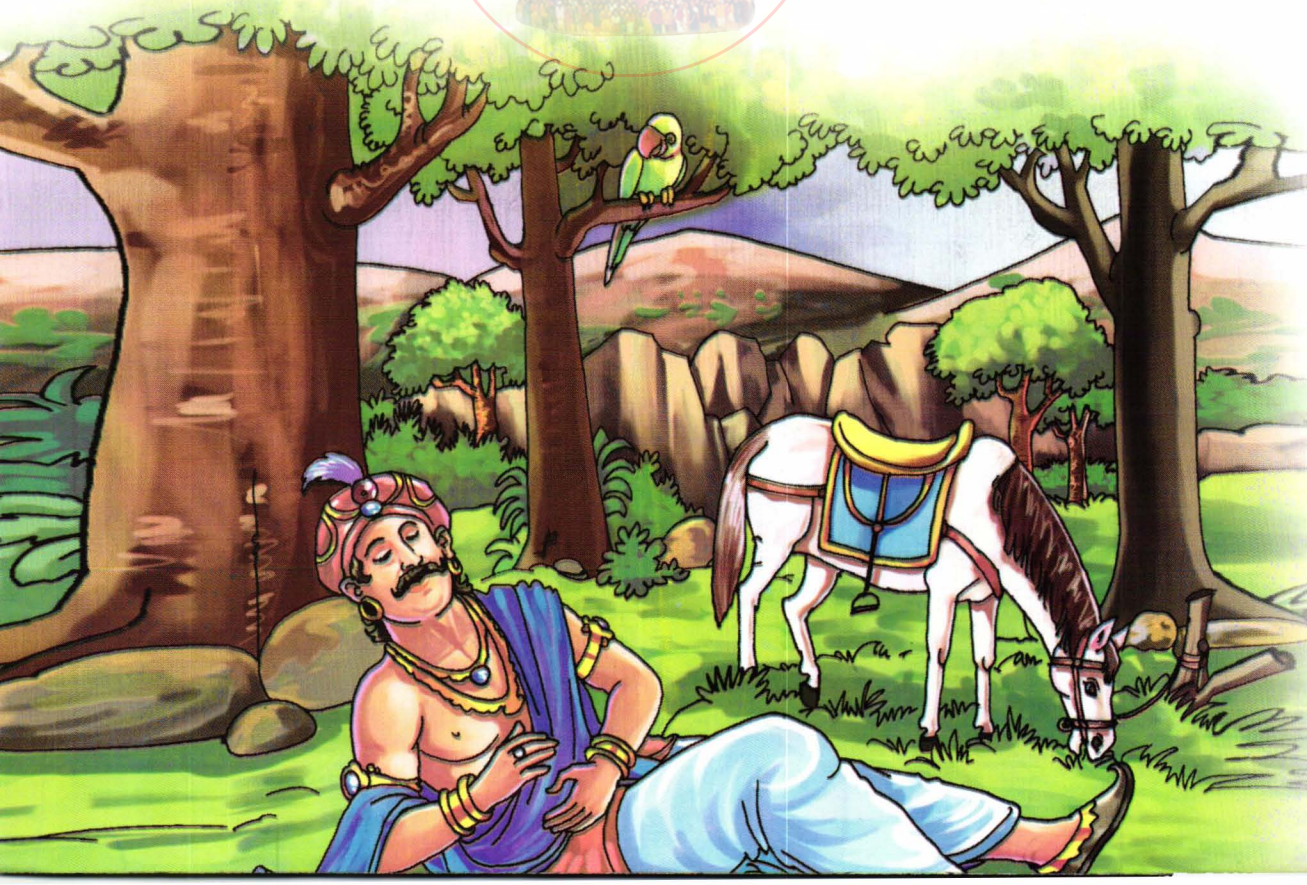

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मंगल मूर्ति अतिथि हैं।'' आश्चर्य से महाराज ने दृष्टि ऊपर उठाई तो देखा कि वृक्ष पर बैठा शुक वह कह रहा था। सम्राट बोले—''एक आप एवं एक ऐसे ही शुक का वह स्वर, जिसने मुझे रात्रि में डरा दिया था। कितना अंतर है दोनों में।''

नन्हा शुक बोल उठा—''महाराज! अरण्यजैत का वह शुक मेरा ही सगा भाई है। उसकी धृष्टता के लिए मैं क्षमा माँगता हूँ। वस्तुतः यह संगति का ही फल है। मेरा भाई दस्युओं में रहकर वैसे ही कुसंस्कार पाता रहा है। मुझे सौभाग्य मिला महर्षि के इस संस्कारभूत आश्रम में रहने का।''

स्वागत करने को आतुर खड़े महर्षि श्यावाश्व महाराज के अंतर्मन को पढ़ते हुए बोल उठे—''अब समझ में आया महाराज! आपके राजकुमार जिन उद्दंड साथियों के साथ रहते हैं, उनके ही कुसंस्कार उनके व्यवहार में परिलक्षित हो रहे हैं। आप साथी व वातावरण बदल दीजिए। राजकुमार को बदलते देर न लगेगी।''

अब राजा की समझ में अच्छी प्रकार से आ गया था कि साथियों की बुरी संगति बालक के कोमल मन पर बुरा प्रभाव छोड़ती है। बालक को मित्र के रूप में अच्छे साथी मिलें तो वे अभिभावक और शिक्षक की भाँति अच्छी भूमिका निभाते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विदुर का भोजन और श्रीकृष्ण

महाभारत का प्रसंग है। विदुर जी ने जब देखा कि धृतराष्ट्र और दुर्योधन अनीति करना नहीं छोड़ते, तो उन्होंने सोचा कि इनका साथ और इनका अन्न मेरी आदतों को भी प्रभावित करेगा। इसलिए वे नगर के बाहर वन में कुटी बनाकर पत्नी सुलभा सहित रहने लगे। जंगल से भाजी तोड़ लेते, उबालकर खा लेते तथा सत्कार्यों में, प्रभु स्मरण में सारा समय लगाते। श्रीकृष्ण जब संधि दूत बनकर गए और वार्ता असफल हो गई तो वे धृतराष्ट्र, द्रोणाचार्य आदि सबका आमंत्रण अस्वीकार करके विदुर जी के यहाँ जा पहुँचे। वहाँ भोजन करने की इच्छा प्रकट की।

विदुर जी को यह संकोच हुआ कि शाक ही प्रभु को परोसने पड़ेंगे। पूछा—"आप भूखे भी थे, भोजन का समय भी था और उनका आग्रह भी, फिर आपने वहाँ भोजन क्यों नहीं किया?"

भगवान बोले—"चाचाजी! जिस भोजन को करना आपने उचित नहीं समझा, जो आपके गले न उतरा, वह मुझे भी कैसे रुचता? जिसमें आपको स्वाद आया तो उसमें मुझे स्वाद न मिलेगा, ऐसा आप कैसे सोचते हैं?"

विदुर जी भावुक हो गए, सोचने लगे—भगवान तो भाव के भूखे होते हैं उन्हें भोजन की क्या कमी, वही संसार को सब कुछ देते हैं। विदुर दंपत्ति के पास भाव की कहाँ कमी थी। भाजी के माध्यम से वही दिव्य आदान-प्रदान चला। दोनों धन्य हो गए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कल्पवृक्ष के नीचे उलटे विचार

एक मनुष्य किसी गाँव को जा रहा था। भूख-प्यास का मारा वह एक पेड़ के नीचे विश्राम करने को लेट गया। पेड़ की ठंढी छाया में उसका मन बड़ा प्रसन्न हुआ। वह कल्पना करने लगा—"काश! यहाँ पीने के लिए पानी होता।" इतने में ही उसने देखा कि एक ठंढा पानी का झरना फूट पड़ा। उसने पानी पिया, प्यास बुझाई। फिर उसने सोचा कुछ खाने को होता तो कैसा रहता। इतने में ही एक स्वादिष्ट पदार्थों से भरा हुआ थाल आ गया। उसने भोजन करके सोने के लिए शय्या की कल्पना की तो एक पलंग वस्त्र बिछा हुआ दिखाई दिया। इन सब घटनाक्रमों से उसे भय हुआ कि कहीं यहाँ कोई मायावी राक्षस तो नहीं है। इतने में ही एक राक्षस सामने आ खड़ा हुआ। उसने विचार किया कि कहीं यह राक्षस मुझे खा न जाए इस विचार के साथ ही वह राक्षस उस यात्री को खा गया। वस्तुतः वह वृक्ष कल्पवृक्ष था, जो मन की इच्छा के अनुसार फल देता था। मनुष्य का चिंतन एवं मनोबल एक प्रकार से कल्पवृक्ष ही है। उसका सदुपयोग करने वाला व्यक्ति ही जीवन लक्ष्य की प्राप्ति का मन चाहा उद्देश्य पूर्ण कर सकता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समय की कीमत

एक व्यक्ति ने एक संत को कहते सुना कि समय सबसे अधिक कीमती है। उसकी मनचाही कीमत प्राप्त की जा सकती है। वह लोगों के पास जाकर कहने लगा—"मेरा समय बहुमूल्य है, सौ रुपये प्रतिदिन के हिसाब से आप ले सकते हैं।"

लोगों ने पूछा—"जो समय हम खरीदेंगे, उससे तुम करोगे क्या?"

व्यक्ति बोला—"मैं तो समय बेच रहा हूँ, उसका आप चाहे जो उपयोग कर लेना, मैं कोई मेहनत क्यों करूँगा?" लोगों में किसी ने उसे दुत्कार दिया, किसी ने पागल कहकर भगा दिया। वह उन्हीं संत के पास पहुँचा और समय के बदले एक भी पैसा न मिलने की शिकायत की।

संत हँसे और बोले—"बेटे, समय की कीमत जरूर मिलती है। पर वह तो कोरा चेक है, उस पर श्रम की कलम और विचार की स्याही से मूल्य भरा जाता है। तुम जीवन के जिस क्षण का जितना सुंदर उपयोग करोगे, जितना श्रेष्ठ विचार उसमें भरोगे, वह पल उतना ही अधिक मूल्यवान बन जाएगा। खाली बैठकर समय गँवाने से तो अंत में पछताना ही पड़ता है।"

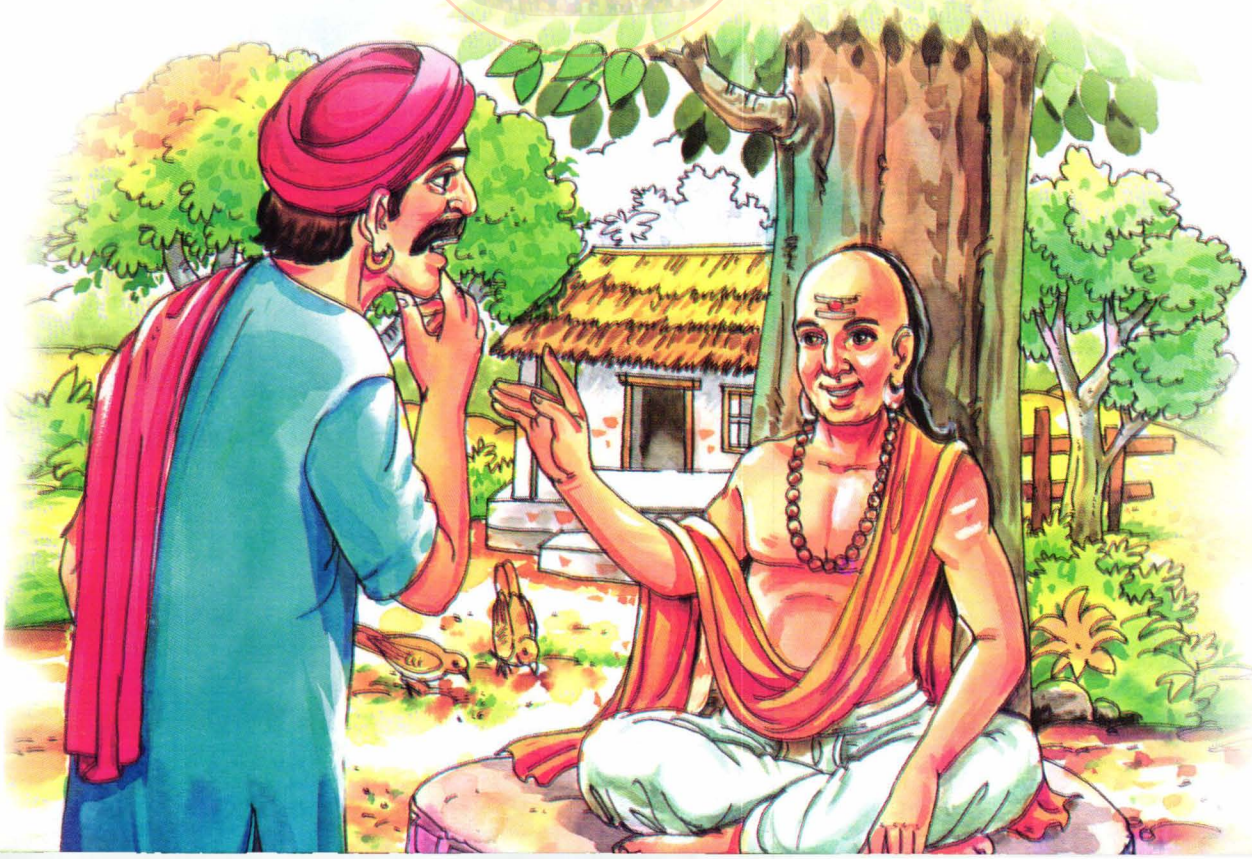

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुष्प की भाव गरिमा

महर्षि जावालि ने उस पर्वत पर ब्रह्मकमल खिला देखा। शोभा और सुंगध पर मुग्ध होकर ऋषि सोचने लगे कि इसे ले जाकर शिवजी के चरणों पर चढ़ाया जाए। ऋषि को समीप आया देख, पुष्प प्रसन्न तो हुआ, पर साथ ही आश्चर्य व्यक्त करते हुए आगमन का कष्ट उठाने का कारण भी पूछा। जावालि बोले—"तुम्हें शिव-समीप रहने का श्रेय देने की इच्छा हुई, सो अनुग्रह के लिए तोड़ने आ पहुँचा।" पुष्प की प्रसन्नता खिन्नता में बदल गई। उदासी का कारण महर्षि ने पूछा, तो फूल ने कहा—"शिवजी के पास रहने का लोभ किसके मन में नहीं होता? फिर देवता को पुष्प जैसी तुच्छ वस्तु की न तो कमी है और न इच्छा। ऐसी दशा में मैं चाहे घाटे में रहूँ चिंता नहीं। मैं छोटे-मोटे कीड़े-मकोड़ों, तितलियों, मधुमक्खियों की कुछ न कुछ सहायता करता रहूँगा, मेरे लिए यही बहुत कुछ है। जब सूखकर पंखुरियाँ झड़ेंगी तो पौधे को खाद भी मिल जाएगी, क्योंकि इसी जमीन में मैं उगा हूँ और बढ़ा हूँ। ऋषि ने पुष्प की भाव-गरिमा को समझा और वे उसे यथास्थान छोड़कर वापस लौट आए।

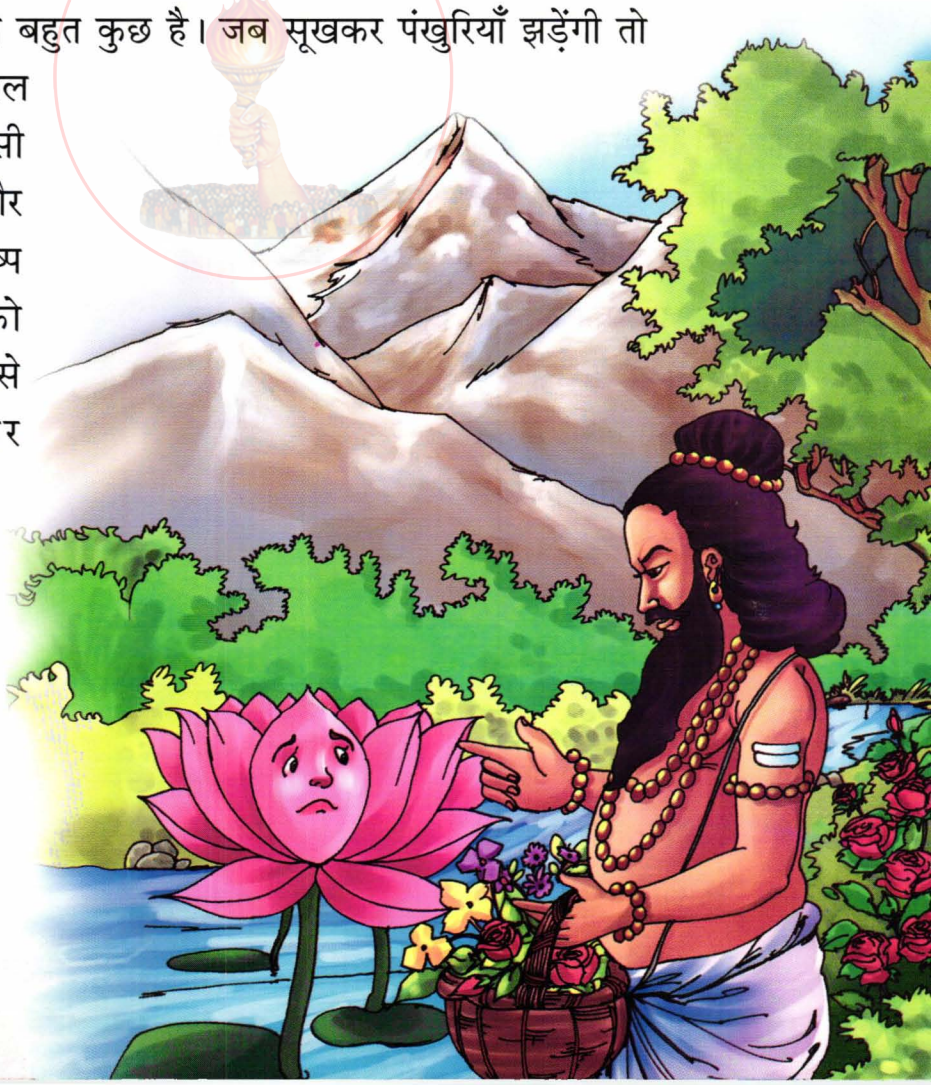

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रेष्ठ पहाड़ कौन सा ?

तीन पहाड़ पास-पास थे। वहीं एक गहरा खड्ड भी था। एक बार देवता उधर से निकले तो तीनों से वरदान माँगने को कहा।

पहले पहाड़ ने कहा—"मैं सबसे ऊँचा हो जाऊँ, ताकि सबसे दूर से दिखाई दूँ।" दूसरे ने कहा—"मूझे खूब हरा-भरा प्राकृतिक संपदा से भरा-पूरा बना दें, ताकि सब मेरी ओर आकर्षित हों।" तीसरे पहाड़ ने कहा—"मेरी ऊँचाई छीलकर इस खड्ड को समतल बना दें, ताकि यह सारा क्षेत्र उपजाऊ हो जाए और लोग यहाँ सुविधा से आ-जा सकें।" देवता तीनों की व्यवस्था बनाकर चले गए। एक वर्ष बाद परिणाम देखने देवता पुनः पहुँचे। पहला पहाड़ ऊँचा हो गया था दूर से दिखता था, पर वहाँ कोई जाता नहीं था। हवा, सरदी, गरमी की मार सबसे अधिक उसे ही सहनी पड़ती थी।

दूसरा पहाड़ प्राकृतिक संपदा से भर गया था, पर बीहड़ इतना था कि किसी के जाने की हिम्मत न पड़ती थी। वन्य पशुओं का आतंक भी उससे खूब बढ़ गया था। तीसरा पहाड़ खड्ड पाटने से समतल हो गया था। सारे क्षेत्र में फसलें उगाई जा रही थीं। खड्ड पट जाने से लोग वहाँ जाने लगे, बसने लगे। उपजाऊ भूमि का लाभ सबको मिलने लगा।

देवताओं ने उस क्षेत्र का नाम उसी तीसरे पहाड़ के नाम पर रखा; जिसने अपने निकटवर्ती क्षेत्र को भी उपयोगी बना दिया। लोगों के आने-जाने का मार्ग बना और उपजाऊ भी। इस प्रयास में उसने अपने अस्तित्व को ही दाँव पर लगा दिया था।

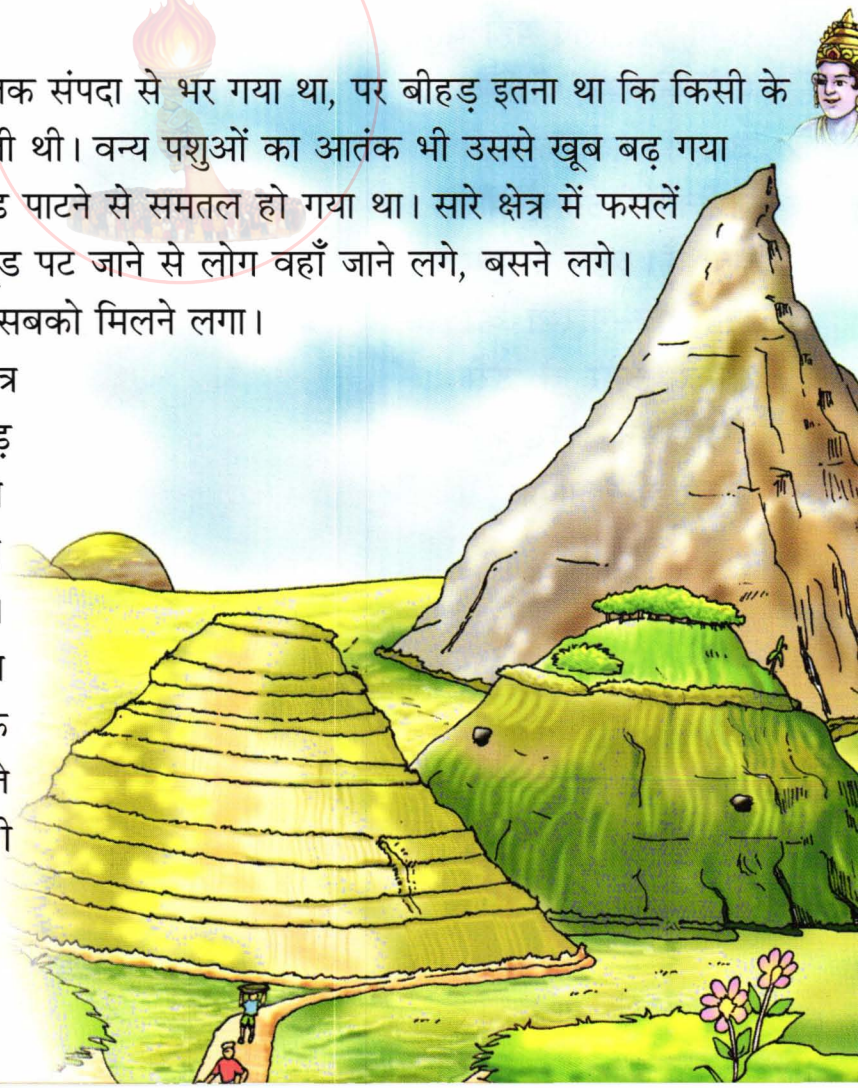

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विश्वासघात

रोम की राज्यसभा के सभापति जुलियस सीजर पर षड्यंत्रकारियों ने आक्रमण किया। षड्यंत्रकारी उन पर आघात कर रहे थे। सीजर निरस्त्र थे फिर भी किसी प्रकार अपना बचाव करने का प्रयत्न कर रहे थे। इसी समय उनके परम विश्वासी मित्र ब्रूट्स ने भी उन पर आक्रमण किया। अब असह्य हो गया। मित्र के विश्वासघात से उनका हृदय फट गया। सीज़र ने ब्रूट्स की ओर देखकर कहा—"मित्र! तुम भी.....।"

सीजर ने अपने बचाव का प्रयत्न छोड़ दिया और आहत होकर मृत्यु की गोद में गिर पड़ा।

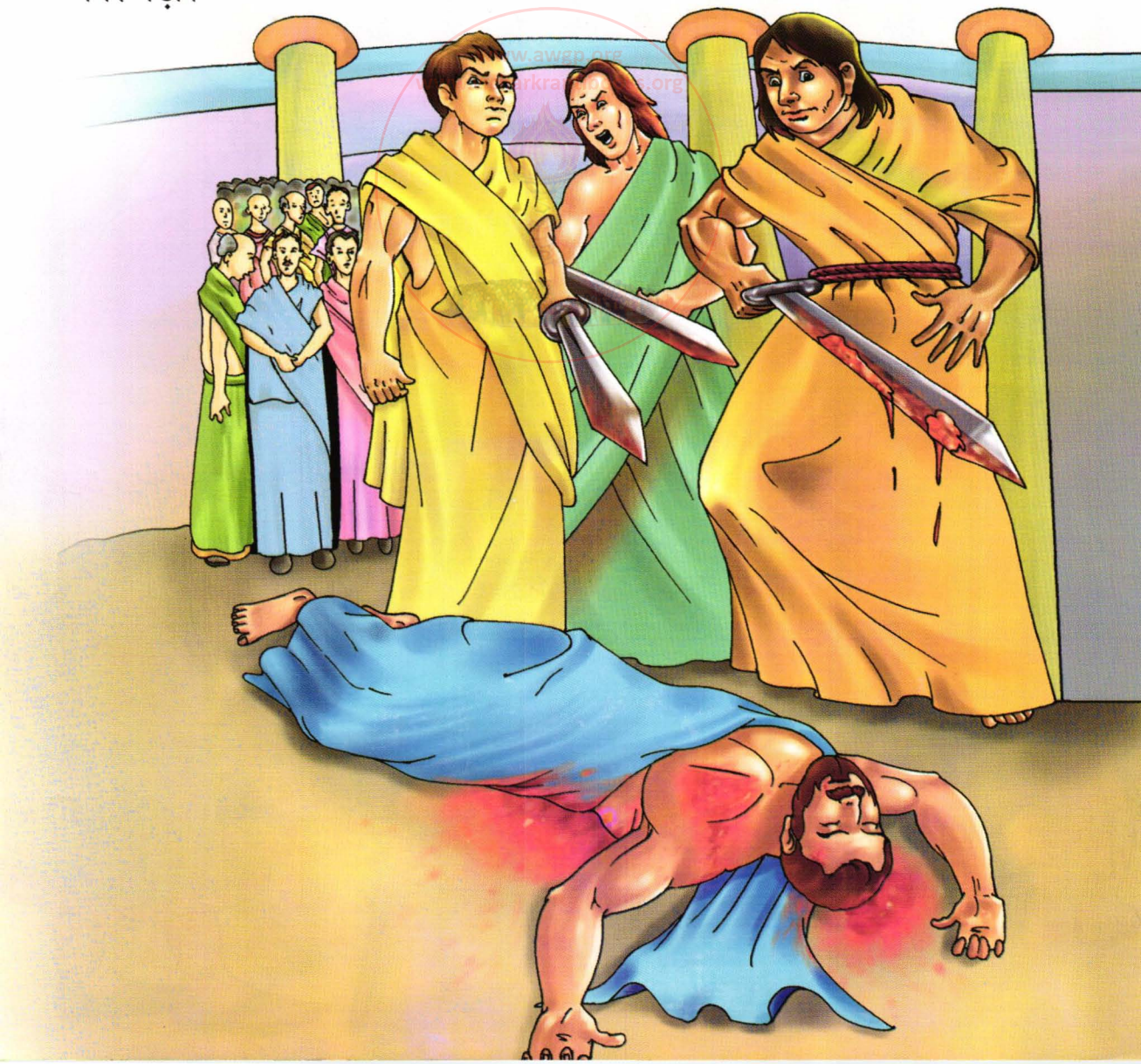

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

फाटक नहीं खुला

जोधपुर महाराज एक युद्ध में लड़ने के लिए सेना समेत गए। हार होती देखकर अपनी जान बचाकर भाग आए। रात्रि को किले का दरवाजा खटखटाया, प्रहरी रानी के पास गए। उस स्थिति में रात्रि के समय दरवाजा उनकी आज्ञा से ही खुल सकता था।

रानी ने पूरा विवरण सुनने के बाद दरवाजा न खोलने का हुक्म दिया और राजा से कहलवा भेजा—"जोधपुर नरेश होते तो पीठ दिखाकर न आते। या तो जीतकर लौटते या उनकी लाश वापस आती। भगोड़ा तो कोई छद्मवेशधारी हो सकता है।"

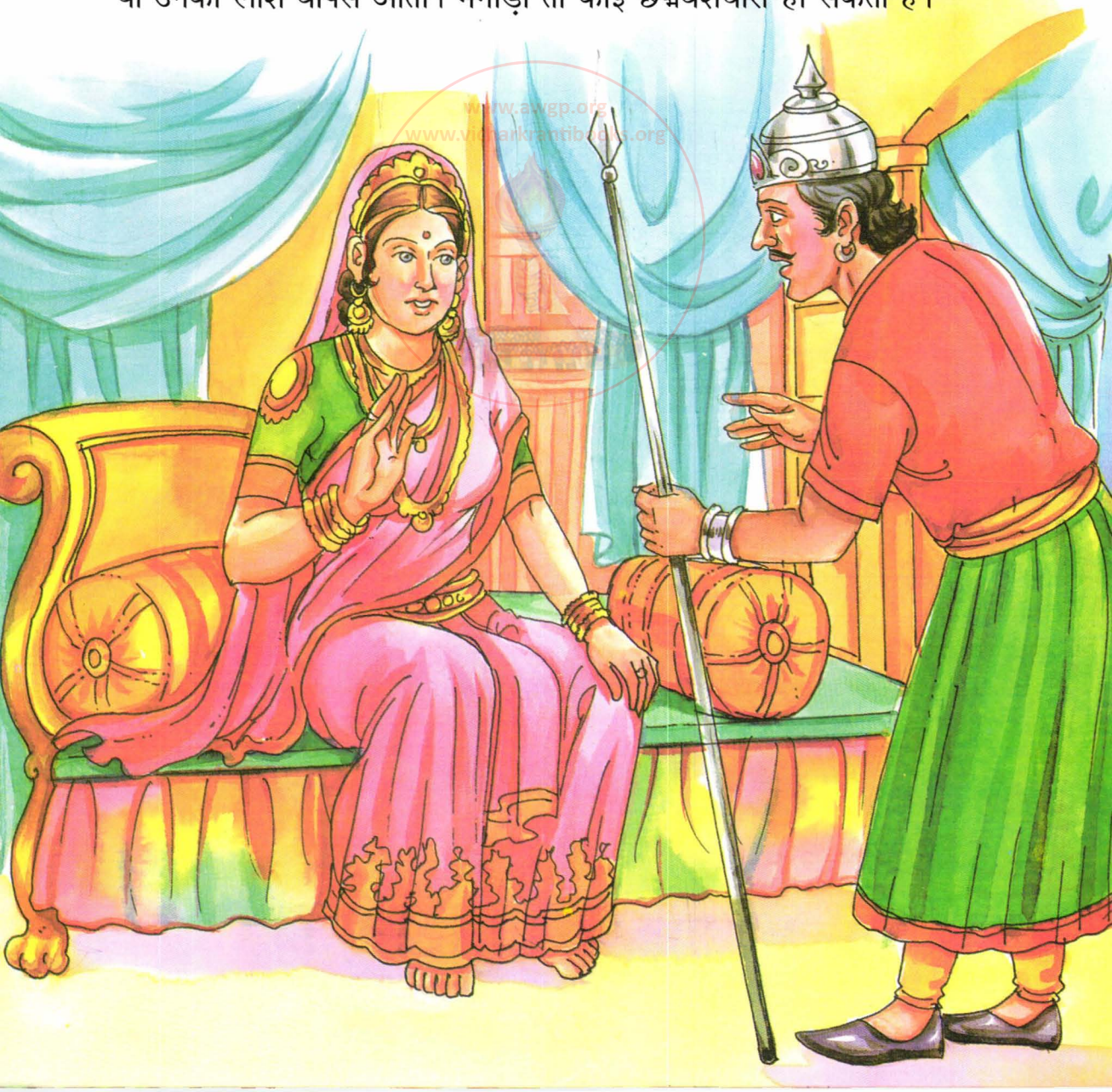

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राजा को पहरेदारों ने रानी का आदेश सुनाया। वे उल्टे पैर वापस लौट गए। पूरे जोश के साथ दोबारा लड़े और जीतकर वापस लौटे।

हमारे देश में युद्ध में कायरता दिखाना कलंक माना जाता है। या तो युद्ध जीतकर आते हैं या युद्ध में शहीद होते हैं, अमर होते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पराधीन न बनें

एक सेठ की पत्नी का स्वर्गवास हो गया। चारों पुत्र समर्थ हो गए थे। उसने अपनी धन-दौलत चारों को बाँट दी और स्वयं खाली हो गया। पुत्रों के विवाह भी हो गए। सेठ जी अपने बड़े बेटे के परिवार में साथ रहते थे। उस बेटे की पत्नी बोली—"हमारा खरच बढ़ गया है, आजादी से नहीं रह पाते, इन्हें अपने दूसरे भाई के यहाँ भेज दें।" सेठ जी अपने दूसरे बेटे के घर रहने लगे, वहाँ भी यही हुआ। इसी प्रकार तीसरे तथा चौथे बेटे ने भी यही कहकर उन्हें अपने यहाँ रखने से मना कर दिया।

सेठ जी ने हिम्मत नहीं हारी। एक फल और सब्जी की छोटी सी दुकान खोली और अपना गुजारा करने लगे। वे हर खरीददार से कहते कि बुढ़ापे के लिए अपनी व्यवस्था पहले ही बना लेनी चाहिए, नहीं तो मेरी तरह पछताना पड़ेगा। परिवार में रहते हुए समाज सेवा के कार्य भी करते रहना चाहिए।

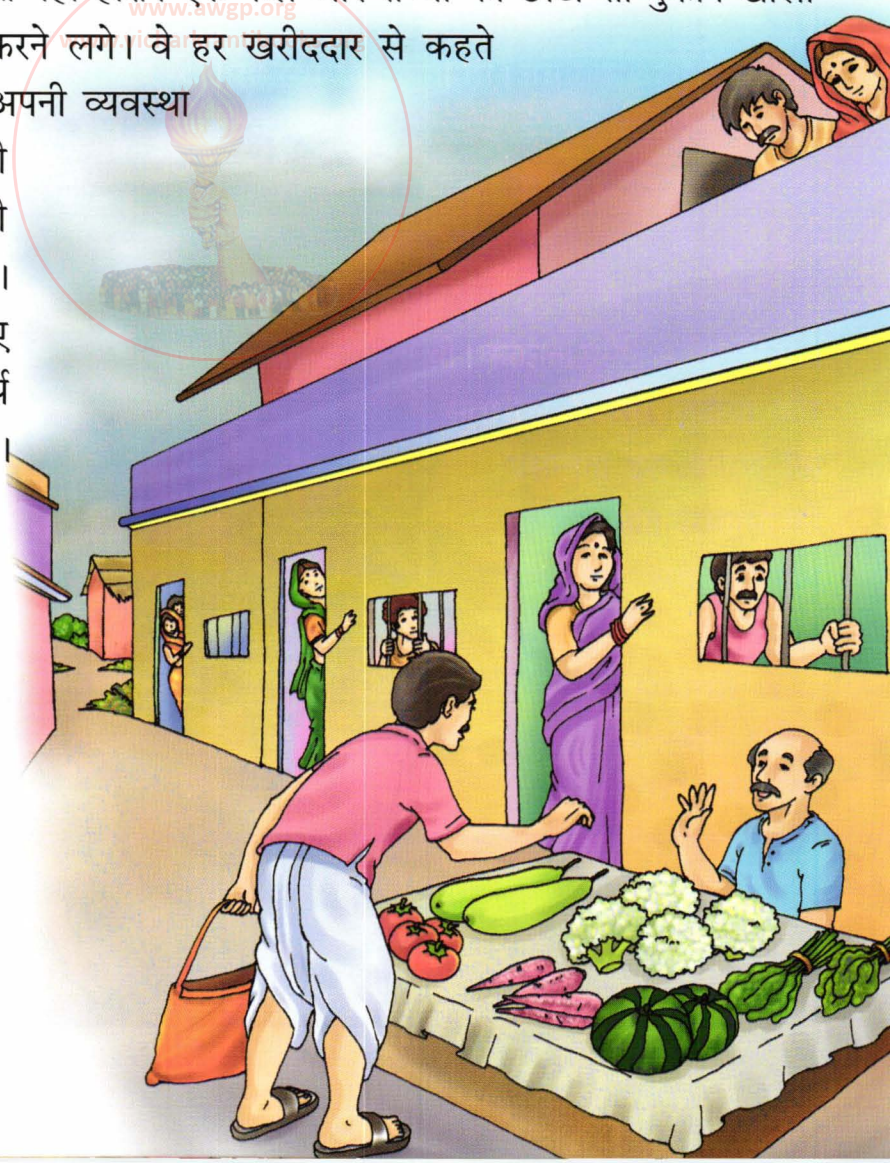

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सार्थक श्रद्धा

बाजिश्रवा के दो शिष्य थे धर्मद और विराध। उनमें एक दिन विवाद छिड़ गया। दोनों अपने को गुरु के प्रति अधिक श्रद्धावान मानते थे और सिद्ध भी करना चाहते थे।

दोनों गुरु के समीप गए और कहा—"गुरुदेव आप बताइए कि हम दोनों में से कौन बड़ा है।" गुरु ने कहा—"अपनी-अपनी श्रद्धा की व्याख्या करो तब निर्णय देंगे।"

धर्मद बोला—"देव! आश्रम जीवन में आपकी प्रत्येक बात मानी। उचित-अनुचित का भी ध्यान नहीं किया। आपकी किसी भी आज्ञा को तर्क या विवेक से परखने का प्रयत्न नहीं किया। क्या इससे बढ़कर भी कोई श्रद्धा हो सकती है?"

गुरुदेव मुस्कराए, अब उन्होंने विराध को संकेत किया। विराध बोला—"भगवन्! मुझे ज्ञान की प्रबल आकांक्षा है, अतएव आप पर श्रद्धा भी अगाध है, पर साथ ही यह भी परखना आवश्यक समझता हूँ कि जो कुछ कहा या बताया जाता है, वह सत्य से परे तो नहीं है। सत्य का मूल्य अधिक है, इसलिए सत्य को पाने के लिए सर्वस्व छोड़ने के लिए तैयार हूँ।"

गुरु ने कहा—"धर्मद! सत्य को परख कर धारण की जाने वाली श्रद्धा ही श्रेष्ठ है। अतः विराध ही श्रेष्ठ माना जाएगा।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भेड़ का आतिथ्य

एक राजपूत था। उसके घर एक गाय भी थी और एक भेड़ भी पाली जा रही थी।

एक दिन उदास होकर बछड़े ने गाय से पूछा—''हमारी ओर कोई आँख उठाकर भी नहीं देखता, पर इस काले-कलूटे मेमने को सभी बड़ी दिलचस्पी से खिलाते और स्नेह जताते हैं।''

माँ चुप रही, फिर बोली—''इसका जवाब अभी नहीं, तुम्हें कुछ ही दिनों में मिल जाएगा बेटे।''

देवी को बलि देने का दिन आया और मेमने का सिर काटकर उस पर चढ़ा दिया गया। बछड़े ने संतोष की सांस खींची और समझा कि बहुत मान मिलने के पीछे भी खतरा छिपा रहता है।

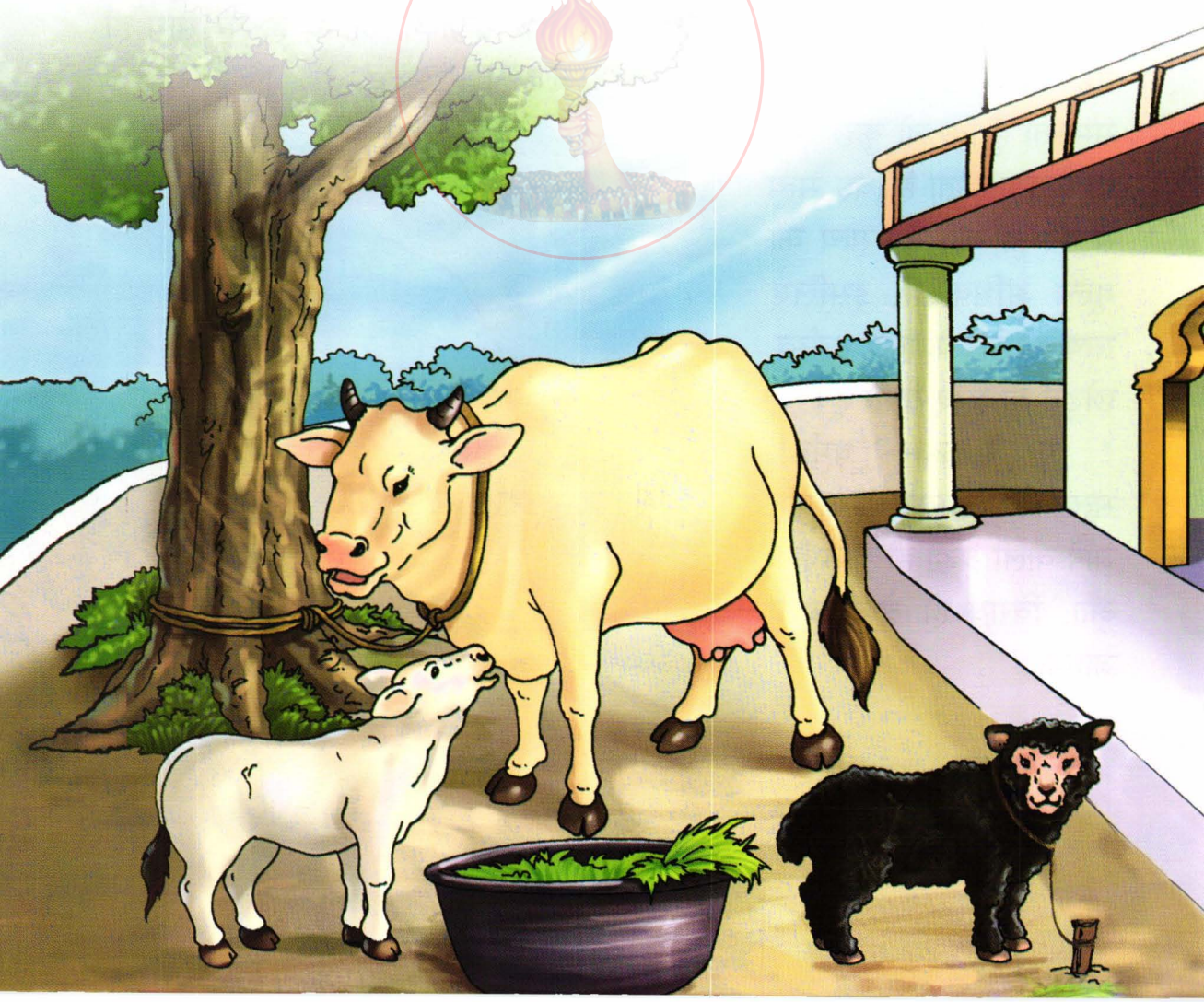

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रतिभा का सही उपयोग

एक राजा के दरबार में कोई जौहरी एक बहुमूल्य हीरा लेकर पहुँचा। राजा ने अपने जौहरियों से उसका मूल्य जाँचने के लिए कहा। वे उस पर एकमत न हो सके। तभी एक वृद्ध जौहरी आया, उसने हीरा जाँचकर कहा—"इसका मूल्य ९९ लाख रुपया है।"

राजा ने पूछा—"९९ लाख ही क्यों, पूरा एक करोड़ क्यों नहीं।" जौहरी ने वह हीरा बीच में रखा, उसके चारों ओर समान कोणों पर १०० हीरे रखे। बीच के हीरे से परावर्तित होकर प्रकाश ९९ हीरों पर पड़ा, एक पर नहीं। वृद्ध जौहरी बोला—"हुजूर! यही इसकी कमी है जिस कारण मैंने इसका मूल्य पूरा एक करोड़ नहीं कहा।"

राजा प्रसन्न हुए। उस वृद्ध जौहरी को इनाम देने की आज्ञा दी। वहीं एक संत बैठे थे। बोले—"महाराज! इन्हें इनाम अवश्य दें, लेकिन साथ ही मेरी ओर से एक मुट्ठी धूल भी इनके सिर पर डलवा दें।" इस विचित्र उक्ति से सभी को आश्चर्य हुआ। राजा ने इसका कारण पूछा। संत बोले—"इनाम पाने की अपनी पात्रता तो यह आप सबके सामने सिद्ध कर चुके हैं। इसलिए वह इन्हें मिलना ही चाहिए, परंतु यह इतना आला दिमाग केवल पत्थरों की बारीकी परखने में जीवन भर लगाता रहा। ऐसा दिमाग देने वाले के बारे में, ईश्वर के बारे में इसने जरा भी गहराई से नहीं सोचा, सत्कार्यों में अपनी प्रतिभा जरा भी नहीं लगाई। इस प्रतिभा का सुनियोजन यदि हुआ होता, तो यह क्या से क्या कर सकती थी।"

विद्या का यदि सदुपयोग न हो, तो उसकी क्या सार्थकता!

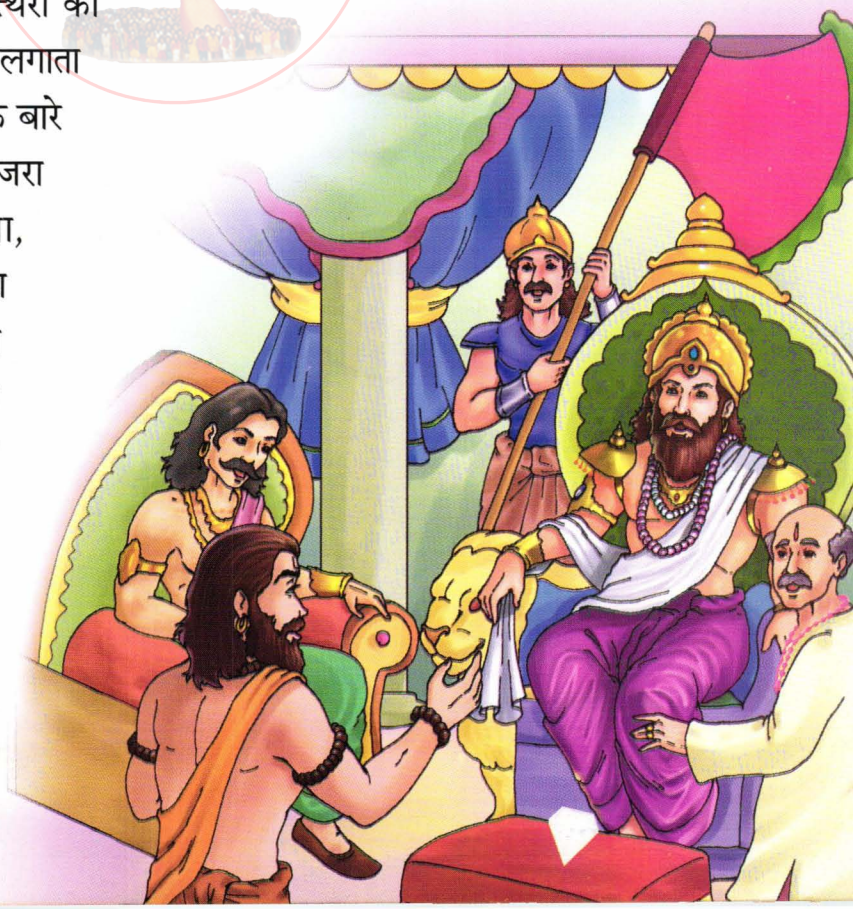

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दो शवों की चर्चा

श्मशान घाट पर पड़ा एक शव दूसरे शव को देखकर मुस्कराने लगा। इस पर दूसरे शव ने कहा—''बंधु! ऐसी क्या बात हो गई जो हँसना आ रहा है, हम दोनों तो एक ही स्थिति में हैं।'' पहला शव उसी मुस्कराहट के साथ बोला—''बंधु! तुम्हें याद नहीं हम दोनों कभी सहपाठी थे। विद्याध्ययन के बाद से तुम वणिक वृत्ति में उलझ गए। दिन-रात पैसा और भौतिक सुख की कामना करते-करते अब तुम्हारी स्थिति यह है कि श्मशान घाट में भी पैसों का ही हिसाब लगा रहे हो।'' ''और आप''—दूसरे शव ने पूछा। उत्तर मिला—''जब तक जीवित रहा, थोड़ा कमाया, पर मस्त रहा और अब जबकि मर गया हूँ तब भी वही मस्ती वही प्रसन्नता। अच्छा तो नमस्कार, लो अब चला।'' यह कहकर पहला शव चिता की ओर चल पड़ा और दूसरा शव अपने हिसाब-किताब की बातों में उलझ गया।

कहते हैं कि व्यक्ति जीवन भर जैसा आचरण करता है वैसे संस्कार मृत्यु आ जाने पर भी पीछा नहीं छोड़ते।

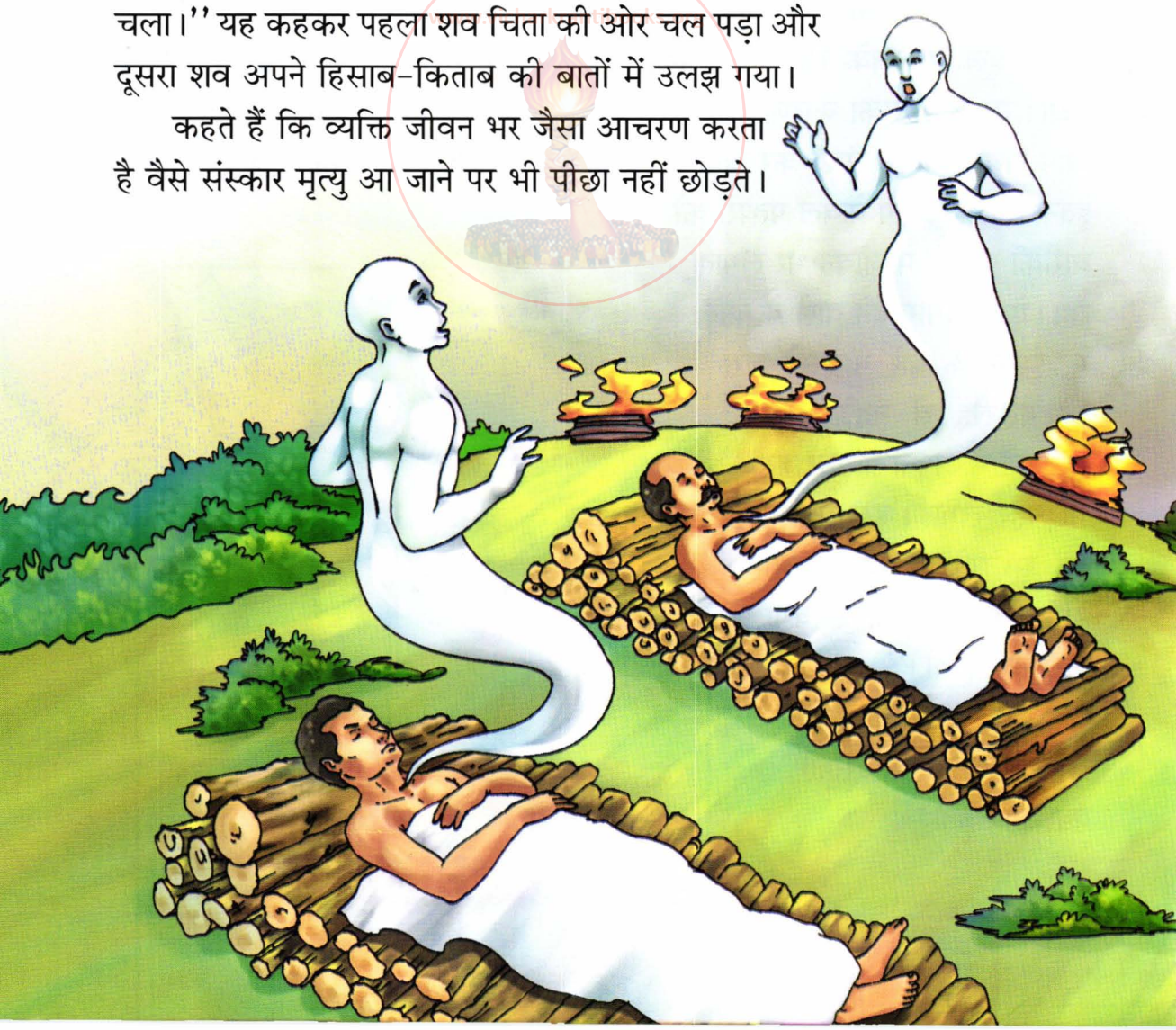

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यर्थ का गर्व

एक जागीरदार अपने जमीन - जायदाद का विस्तार और वैभव दार्शनिक सुकरात को सुना रहा था। डींगे सुनते-सुनते जब बहुत देर हो गई तो सुकरात ने एक पृथ्वी का नक्शा मँगाया और पूछा—"बताना इसमें तुम्हारा ठिकाना कहाँ है?" नक्शे में उस ठिकाने का उल्लेख न था, केवल प्रांत ही मटर के बराबर जगह में दिखाई पड़ता था। उसने उसी की ओर इशारा किया। सुकरात ने फिर पूछा—"यह तो एक प्रांत का नक्शा हुआ। तुम अपने ठिकाने का स्थान और अनुपात बताओ।" जागीरदार ने कहा—"इस नक्शे के अनुपात से मेरा ठिकाना एक सुई की नोंक के बराबर होना चाहिए।"

सुकरात हँस पड़े। उन्होंने ब्रह्मांड के नक्शे में पृथ्वी को एक तिल भर बताते हुए कहा—"इस पृथ्वी में भी तुम्हारा ठिकाना अदृश्य जितना कम है फिर समस्त ब्रह्मांड की तुलना में तो वह अत्यंत ही छोटे से छोटा ही होगा। इतनी छोटी वस्तु पाकर तुम इतनी बड़ी डींगे क्यों हाँकते हो।"

व्यक्ति को अपनी संपत्ति, बुद्धि, राजपाट आदि का घमंड कभी नहीं करना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुबेर का विवेक और पुरुषार्थ

पुलस्ति के विश्रवा के यहाँ एक पुत्र का जन्म हुआ। वह बहुत ही कुरूप था। बेडौल आकार का होने का कारण सभी उसकी हँसी उड़ाते। उसे लोगों की मूर्खता पर बड़ा दुःख हुआ। 'कुबेर' नामक इस पुरुषार्थी ने अपनी हँसी अपने ही घर में उड़ते देख ठान ली कि वह मानव समुदाय को यह बताकर रहेगा कि मनुष्य जीवनरूपी प्राप्त संपदा का सदुपयोग कर महान से महान बना जा सकता है। शरीरगत सुंदरता नहीं,

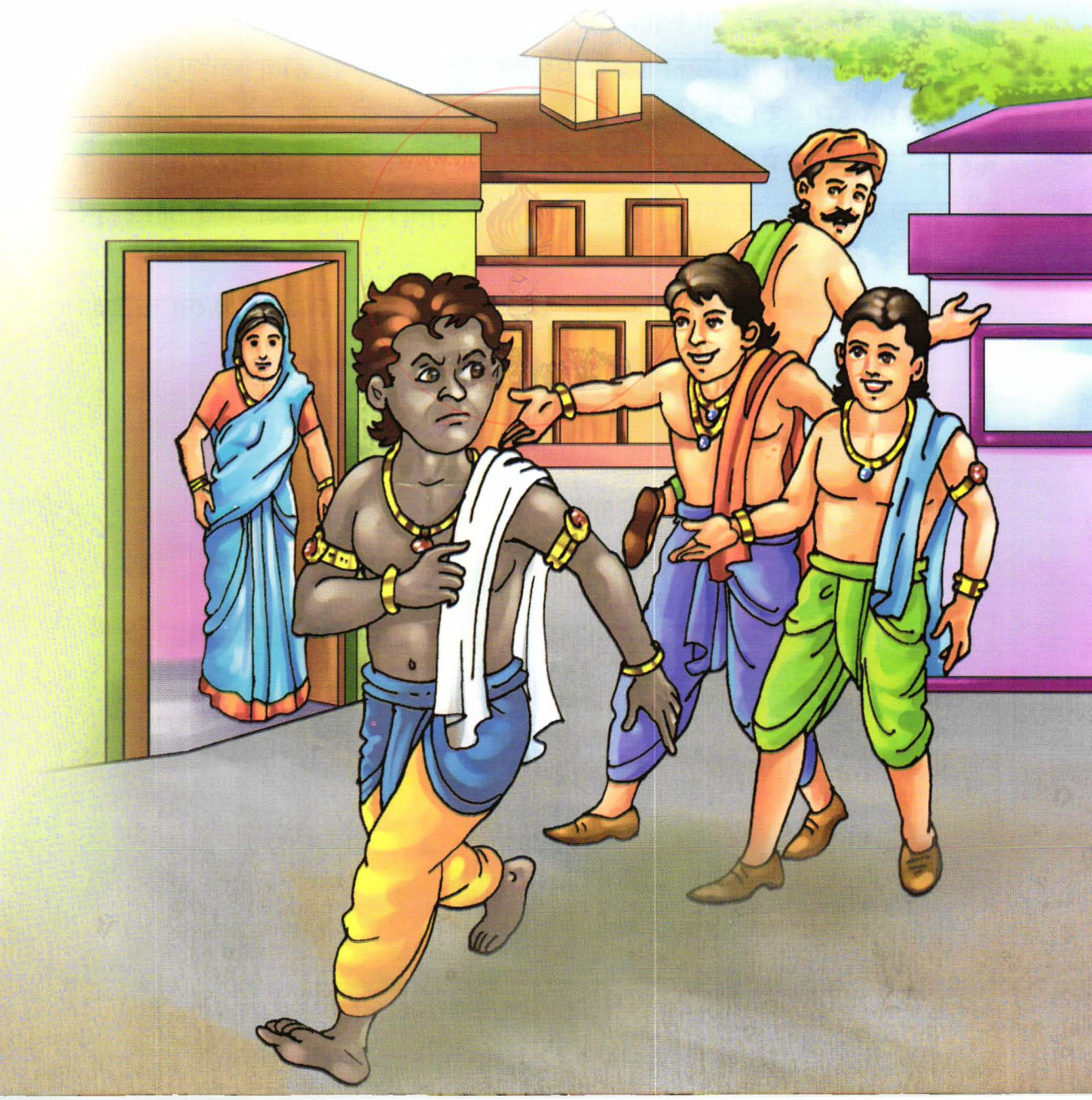

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपितु गुणरूपी संपदा महत्त्वपूर्ण है एवं उसे ही अर्जित किया जाना चाहिए। यह सोचकर अपनी योग्यता बढ़ाने के लिए उसने कठोर तप किया। अपनी लगन से उसने पिता व बाबा को भी इस साधना में सम्मिलित कर लिया। देवताओं ने उन्हें धन का स्वामी—लोकपाल बनाया और वे अलकापुरी में राज करने लगे।

धन के देवता कुबेर ने अपने गुण बढ़ाए तथा सबके पूज्य हो गये।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लक्ष्मी जी क्यों लौटी ?

एक सेठ का पूर्व पुण्य समाप्त हो गया। नया उसने अर्जित नहीं किया। लक्ष्मी जी पुण्य के फल से आती हैं और उसके समाप्त होने पर चली जाती हैं। सो उनने अपने चले जाने की बात स्वप्न में बता दी। सेठ के अनुनय-विनय करने पर भी वे रुकीं नहीं। हाँ, इतना भर कह दिया कि मुझे रोको तो मत, पर कोई और वर माँग लो। सेठजी ने माँगा—"मेरा परिवार सहयोगपूर्वक रहे, पराक्रमी और संयमी बना रहे, इतना और देती जाइए।" लक्ष्मी जी ने प्रसन्नतापूर्वक वर दे दिया। वे लोग गरीबी में भी अधिक सद्भाव और अधिक परिश्रम अपनाकर रहने लगे।

कुछ समय बाद लक्ष्मी जी फिर लौट आईं। सेठ ने कारण पूछा तो उनने कहा—"पारस्परिक सद्भाव और पराक्रम, पुरुषार्थ भी पुण्य में ही गिना जाता है। वह जहाँ रहेगा, वहाँ मुझे विवश होकर आना पड़ेगा। लक्ष्मी जी को पाकर वह परिवार बहुत प्रसन्न हुआ और वे फिर जाने न पावें, ऐसा आचरण प्रयत्नपूर्वक बनाकर रखने लगा।

जिस परिवार में आत्मीयता के संबंध प्रगाढ़ होंगे, सुव्यवस्था एवं विवेकशीलता संव्याप्त होगी, वहाँ अभाव कभी रह नहीं सकता।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हम परिस्थितियों के दास नहीं

लोकसेवी रविशंकर महाराज उन दिनों सौराष्ट्र के जमींदारों की शराब छुड़ाने के कार्य में लगे हुए थे। कइयों ने छोड़ा भी। एक दिन एक जमींदार साहब बोले—"महाराज! मेरी इच्छा तो बहुत है पर शराब छूटती ही नहीं।" रविशंकर ने उन्हें दूसरे दिन अपने घर आने को कहा। दूसरे दिन ठीक समय पर जमींदार साहब पहुँचे तो देखा कि रविशंकर जी खंभा पकड़े खड़े हैं। जमींदार ने कहा—"महाराज! अब वे खास बातें बताइए।" रविशंकर जी बोले—"भाई! कैसे बताऊँ, खंभे ने पकड़ रखा है, छोड़ता नहीं।" जमींदार हँस पड़ा, बोला—"महाराज क्या यह बेजान वस्तु भी आपको पकड़ सकती है।" खंभा छोड़ते ही रविशंकर बोले—"भाई, यही तो मैं भी कहता हूँ कि शराब भी तो बेजान है, बुद्धिमान मनुष्य को वह कैसे पकड़ सकती है?" जमींदार साहब ने उसी दिन से शराब पीना छोड़ दिया और वे यह मानने लगे कि आदतें किसी को नहीं पकड़ती, मनुष्य स्वयं ही आदतों को पकड़ लेता है।

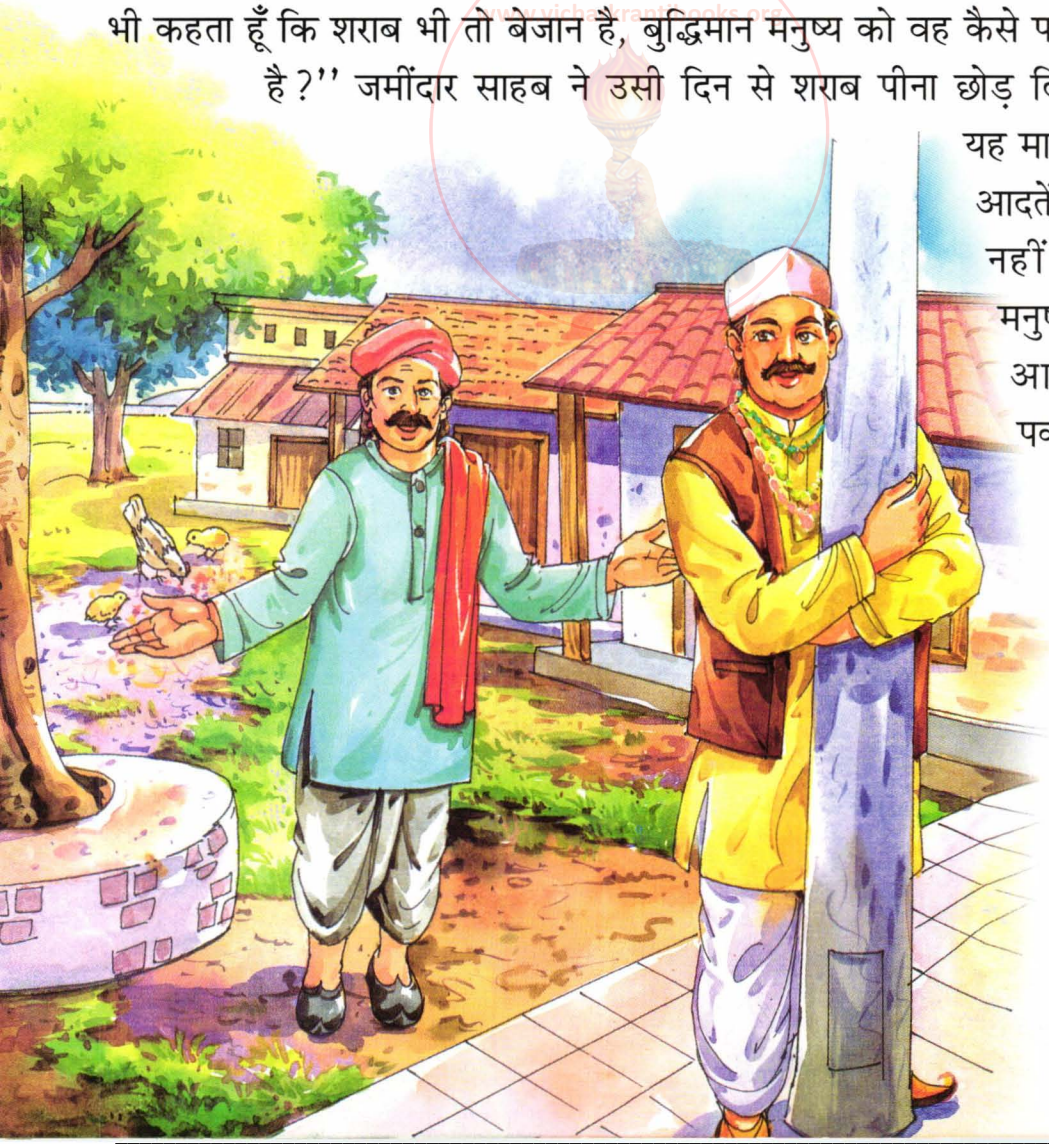

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्तराधिकारी की खोज

महर्षि जरत्कारू के गुरुकुल में छात्र विद्रुध ने प्रवेश पाया। ऋषि को विद्यार्थी प्रतिभावान लगा, अस्तु उसे समझाया, पौरुष की परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर ही कोई वरिष्ठ बन सकता है। तुम पराक्रम के साथ-साथ पुस्तकें पढ़ते रहो। विद्रुध महर्षि के परामर्श से सहमत हो गया। उसे सौ गाएँ सौंपी गईं और प्रभुदारण्य में उन्हें चराते हुए हजार हो जाने पर वापस लौटने को कहा। पाठ्यपुस्तकें भी उसकी पीठ से बाँध दीं। विद्रुध को बारह वर्ष लगे और गाएँ हजार हो गईं। दूध पीकर उनके सभी बच्चे हृष्ट-पुष्ट थे।

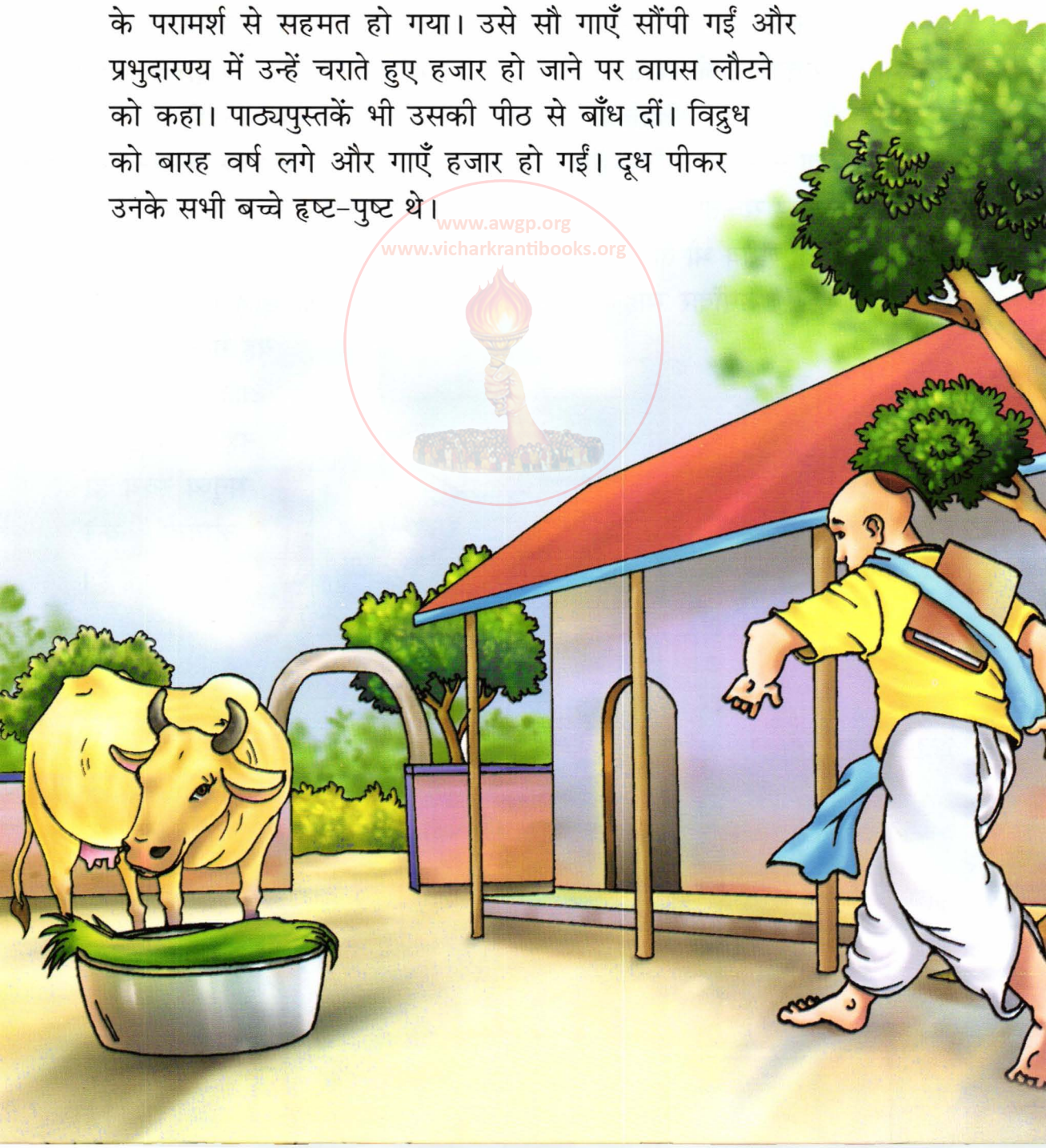

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस बीच उन्हें अनेक के साथ संपर्क साधने और परामर्श करने का अवसर मिला। मार्ग की कठिनाइयों और समस्याओं से निपटते रहे। उनकी प्रतिभा निखर पड़ी। वापस लौटे तो उनके चेहरे पर ब्रह्मतेज टपक रहा था। अपनी बुद्धि का प्रयोग करके जो उन्होंने पढ़ा और समझा, उससे कहीं अधिक था, जो आश्रम में रहकर पढ़ने वाले छात्रों ने सीखा था।

जरत्कारू अपने इस शिष्य के साहस को देखकर अतीव प्रसन्न हुए। अपने आश्रम का कार्य सौंपकर स्वयं कहीं अन्यत्र बड़े काम के लिए चले गए। उत्तराधिकारी की उन्हें तलाश थी, सो इस परीक्षा के द्वारा पूरी हुई।

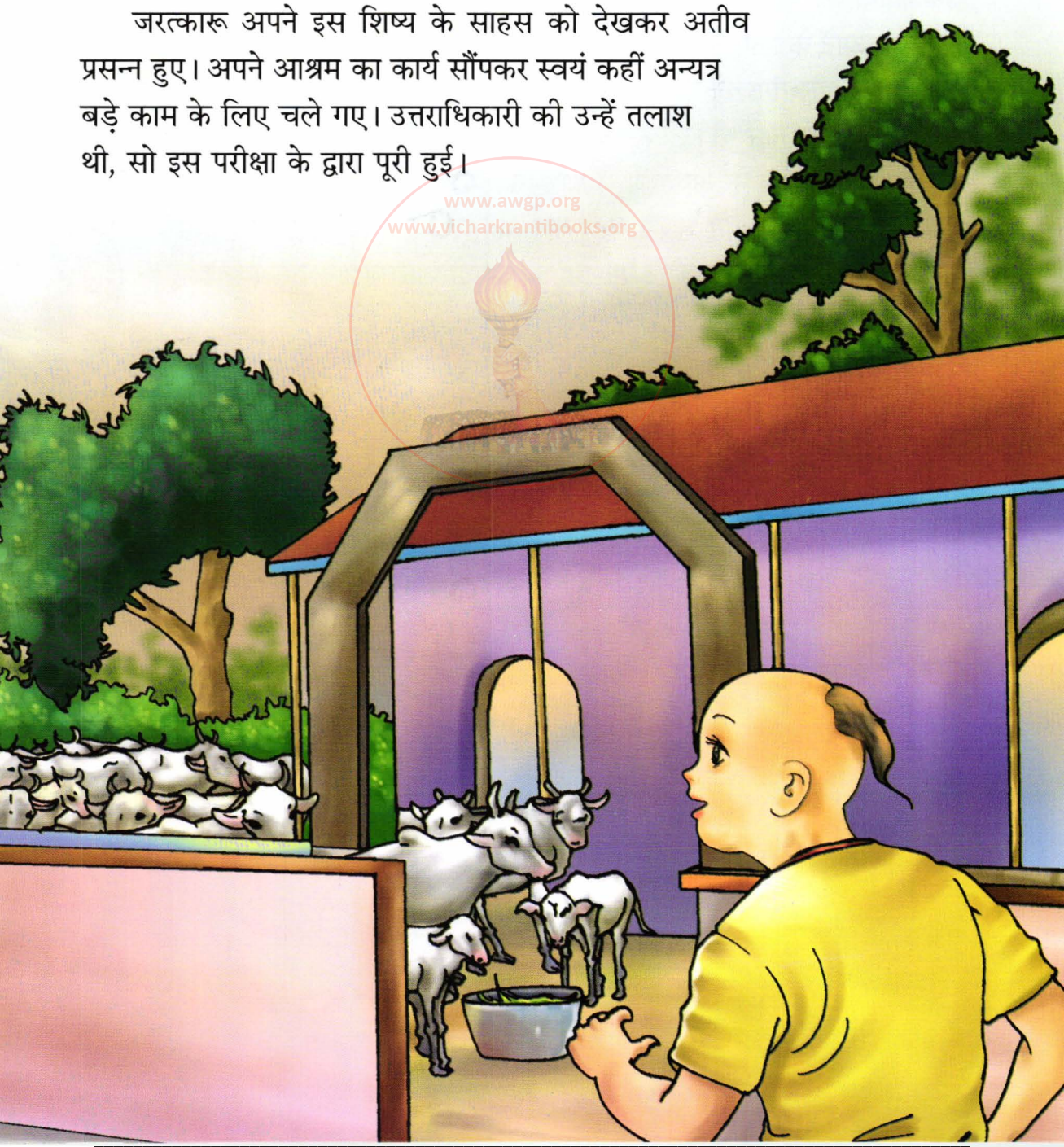

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गंगा भूलोक में उतरी

शोक-संताप की नारकीय अग्नि में जलते पूर्वजों के परित्राण के लिए गंगा का भूलोक पर अवतरण आवश्यक था। भगीरथ को यह मालूम हुआ कि किसी तरह गंगा पृथ्वी पर आ जाएँ तो पितरों को सद्गति मिल जाएगी और भूलोक के प्राणियों एवं वनस्पतियों की प्यास बुझेगी। महलों का भोग-विलास छोड़कर चल पड़े तप करने। गंगा पृथ्वी पर आने के लिए तैयार हो गईं। भगवान शंकर ने अपनी जटाओं में गंगा के तीव्र वेग को सँभाला और गंगा को पृथ्वी की ओर प्रवाहित कर दिया। भगीरथ की अपनी निज की सामर्थ्य बिल्कुल नहीं थी। लोक-कल्याण के लिए उन्हें ईश्वरीय शक्ति, भगवान शिव का सहयोग मिला। गंगा के अवतरण से शाप-पीड़ित भगीरथ के पूर्वजों को सद्गति मिली। वे स्वयं यशस्वी हुए और सबसे बड़ी बात यह हुई कि उनके सद्प्रयत्नों द्वारा अवतरित गंगा द्वारा कोटि-कोटि प्राणियों को अपनी प्यास बुझाने का अवसर मिला।

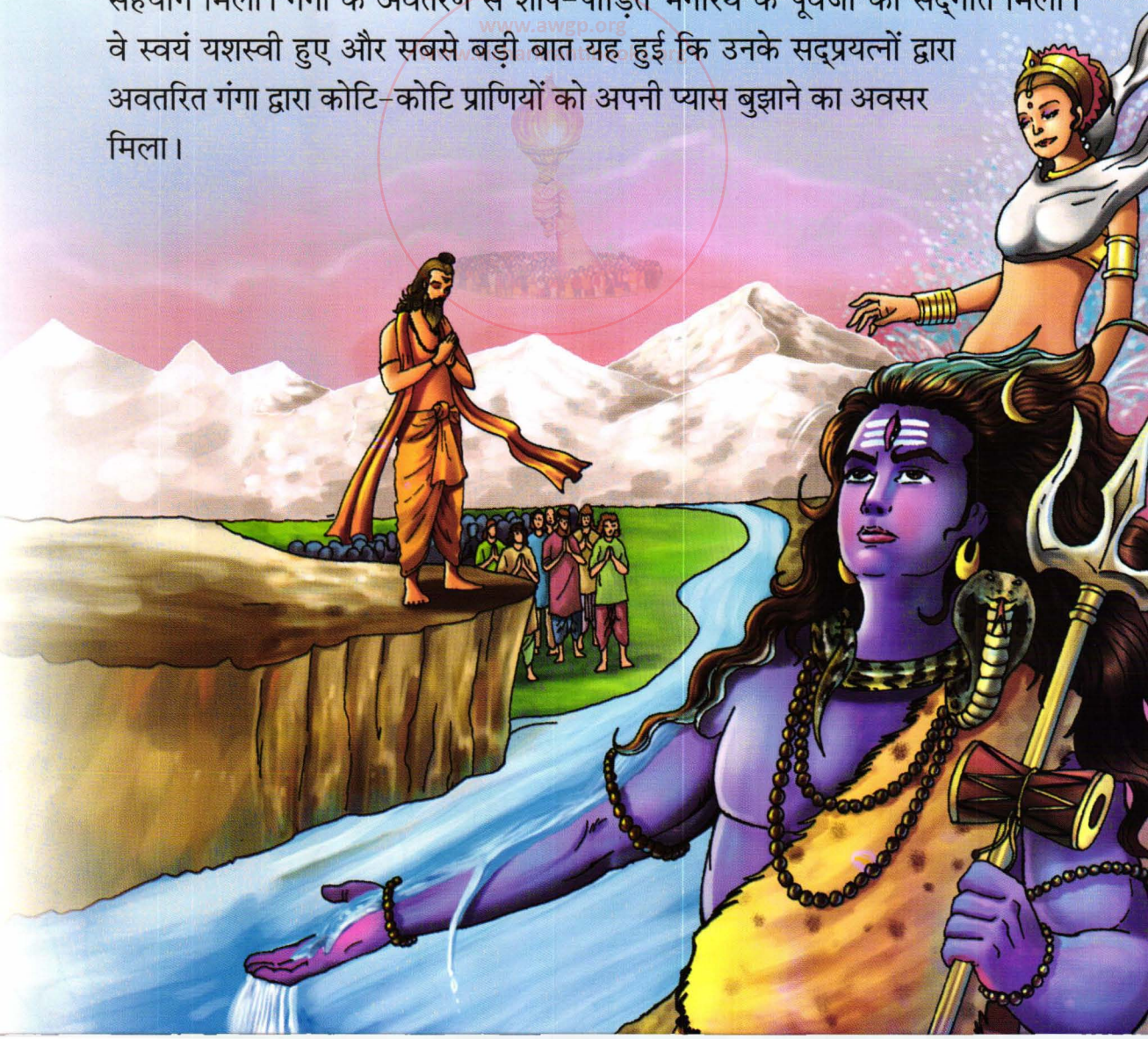

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीनो की पाठशाला

यूनान का एक वृद्ध दार्शनिक अपने मित्र से बोला—"मैंने लोगों को सचाई और सदाचार की शिक्षा देने की योजना बनाई है। विद्यालय के लिए स्थान चुन लिया गया है, पर विद्याध्ययन के लिए विद्यार्थी नहीं मिलते।" मित्र व्यंग्य करते हुए बोले—"तो आप कुछ भेड़ें खरीद लीजिए और अपना पाठ उन्हें ही पढ़ाया करें। तुम्हारी इस योजना के लिए आदमी मिलने मुश्किल हैं।" हुआ भी ऐसा ही, कुल दो युवक आए, जिन्हें घर वाले आधा पागल समझते थे और मुहल्ले वाले सिरदरद। वृद्ध ने उन्हीं को पढ़ाना शुरू कर दिया। दूसरे लोग कहा करते—"बुड्ढे ने मन बहलाने का अच्छा साधन ढूँढ़ा।"

किंतु यही दोनों इस बूढ़े विचारक से शिक्षा प्राप्त कर जब पहली बार घर लौटे तो उनके रहन-सहन, बोल-चाल, अदब-व्यवहार ने लोगों का हृदय मोह लिया। फिर तो विद्यार्थियों की इतनी संख्या बढ़नी शुरू हुई कि विद्यालय पूरा विश्वविद्यालय बन गया। पहले के दोनों छात्रों में एक यूनान का प्रधान सेनापति, दूसरा मुख्य सचिव नियुक्त हुआ। यह वृद्ध ही सुविख्यात दार्शनिक जीनो थे और उनकी पाठशाला ने जीनो की पाठशाला के नाम से विश्व-ख्याति अर्जित की। सुयोग्य विद्यार्थी न मिलें तो भी मनीषी निराश नहीं होते। वे अनगढ़ को सुगढ़ व श्रेष्ठ बनाने का प्रयास करते हैं।

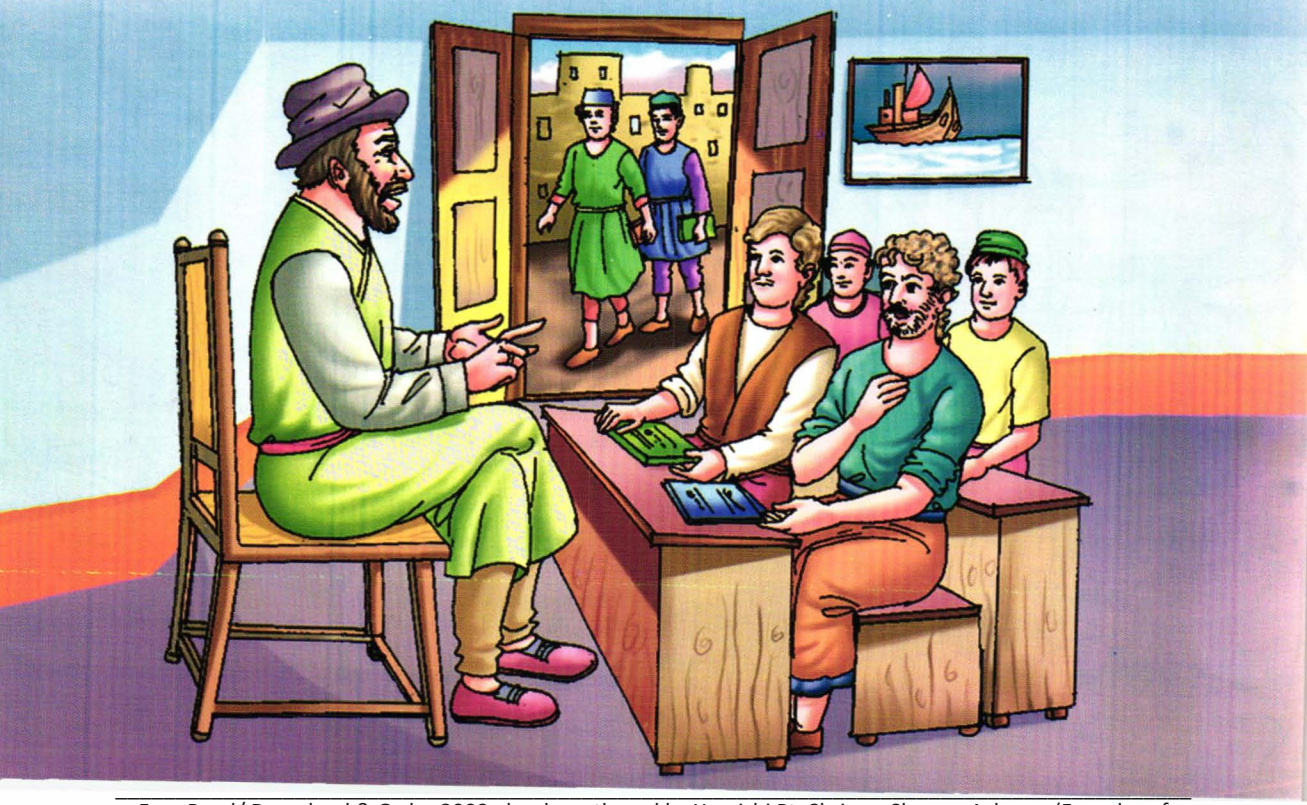

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बीमारी का कारण

एक था राजा। एक बार वह बीमार पड़ गया। उसे भोजन पचना बंद हो गया। जब भी कुछ खाता, पेट में पीड़ा होने लगती। राजवैद्यों ने बहुत इलाज किए। कई औषधियाँ आजमाईं, परंतु कोई लाभ न हुआ। बहुत से वैद्य बुलाए गए। राजा के रोग को जानने के बहुत प्रयत्न किए। परंतु किसी निर्णय पर न पहुँच सके कि आखिर कौन से रोग से राजा पीड़ित हैं। वैद्य भी घबराए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आखिर उन्होंने निश्चय किया कि यह देखना चाहिए, राजा सारा दिन करता क्या है? उन्होंने राजा की दिनचर्या को बड़े ध्यान से देखा। वे सयाने थे। राजा की एक ही बात को देखकर वह सब समझ गए। उन्होंने देखा कि काम ज्यादा होने के कारण राजा दरबार में ही भोजन करता है। तब उन्होंने राजा से कहा—"राजन्! आप दरबार में भोजन करना छोड़ दीजिए। जिस समय आप खाना खा रहे होते हैं, तब दरबार में अन्य सभी भूखे होते हैं। वह आपकी ओर भूखी नजरों से ताकते रहते हैं। आप पहले उन्हें खाना दीजिए, फिर स्वयं खाइए। ऐसा करके देखिए, आपके पेट में पीड़ा नहीं रहेगी।" राजा ने ऐसा ही किया। पहले अन्य लोग खाना खा लेते, फिर वह खाता। पेट ठीक होने से वह स्वस्थ हो गया। रानियाँ प्रसन्न हो गईं। मंत्री निश्चिंत हो गए।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

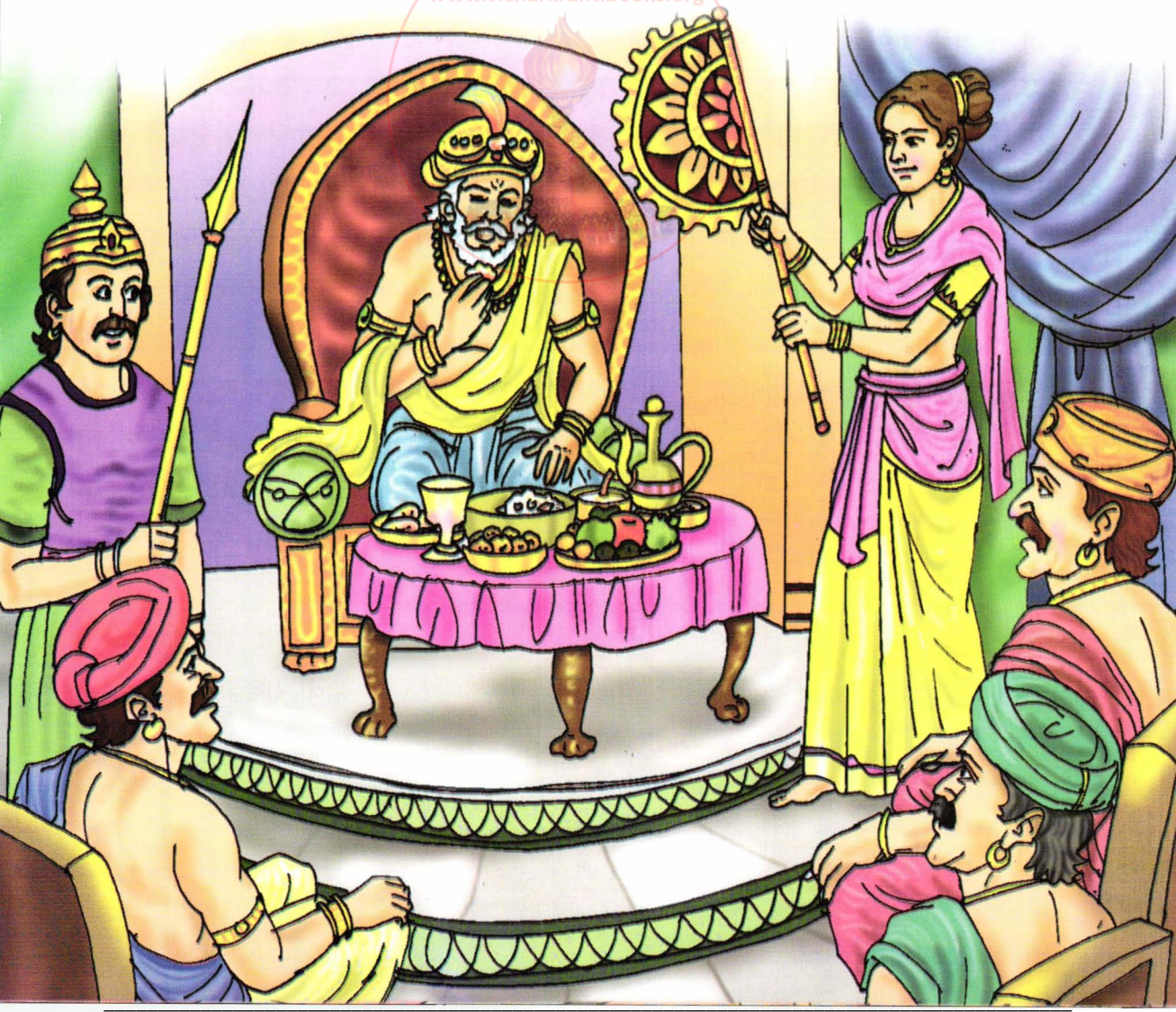

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बाबा राघवदास

गाँव के बाहर एक साधु आसन बिछाकर ध्यान हेतु बैठने की तैयारी कर रहे थे कि गाँव से बड़े जोरों का कोलाहल सुनाई पड़ा। कुछ सोचें तब तक लपलपाती आग की लपटें दिखाई पड़ने लगीं। लगा जैसे क्षितिज जल रहा हो। वस्तुस्थिति को परखते देर न लगी और वे ध्यान की तैयारी छोड़कर दौड़ पड़े। खेतों में अरहर की खूँटियाँ बार-बार उनके पैरों में चुभ जातीं, जिससे पैर लहूलुहान हो गए। इसकी परवाह किसे थी। वे भागते गए, जब तक कि घटनास्थल पर पहुँच न गए। पहुँचकर देखा कि एक विशाल हवेली में आग की लपटें शोले उगल रही हैं और घर के लोग बाहर खड़े छाती पीट रहे हैं। घर का मालिक चिल्ला रहा था—"कोई बचाओ रे। दो बैल भीतर बँधे हैं।" चिल्लाने वाले और बाहर खड़े लोगों में से किसी की हिम्मत न थी कि जाकर बैलों को खोल दे। साधु के मन में भरी करुणा छलक पड़ी। उन्होंने एक कंबल लपेटा और तेजी से मकान में घुस गए। बैलों को खोजने और खोलने में थोड़ा समय तो लगा ही। तब तक आग ने द्वार को घेर लिया था। बाहर खड़े लोग आशंकित थे कि अब क्या होगा? पर दुबले-पतले संन्यासी ने छलांग लगाई और आग के बाहर, बैल भी बाहर आ गए। बाद में सभी के सहयोग से आग पर काबू पा लिया गया। साधु पुनः ध्यान करने बैठ रहा था। उपासना की नियमितता में विघ्न के बावजूद उनके चेहरे पर कृतज्ञता मिश्रित प्रसन्नता थी। कृतज्ञता इसलिए कि भगवान ने सेवा का अवसर जुटाया और प्रसन्नता इस कारण कि आज साक्षात परमात्मा की सेवा का अवसर मिल सका।

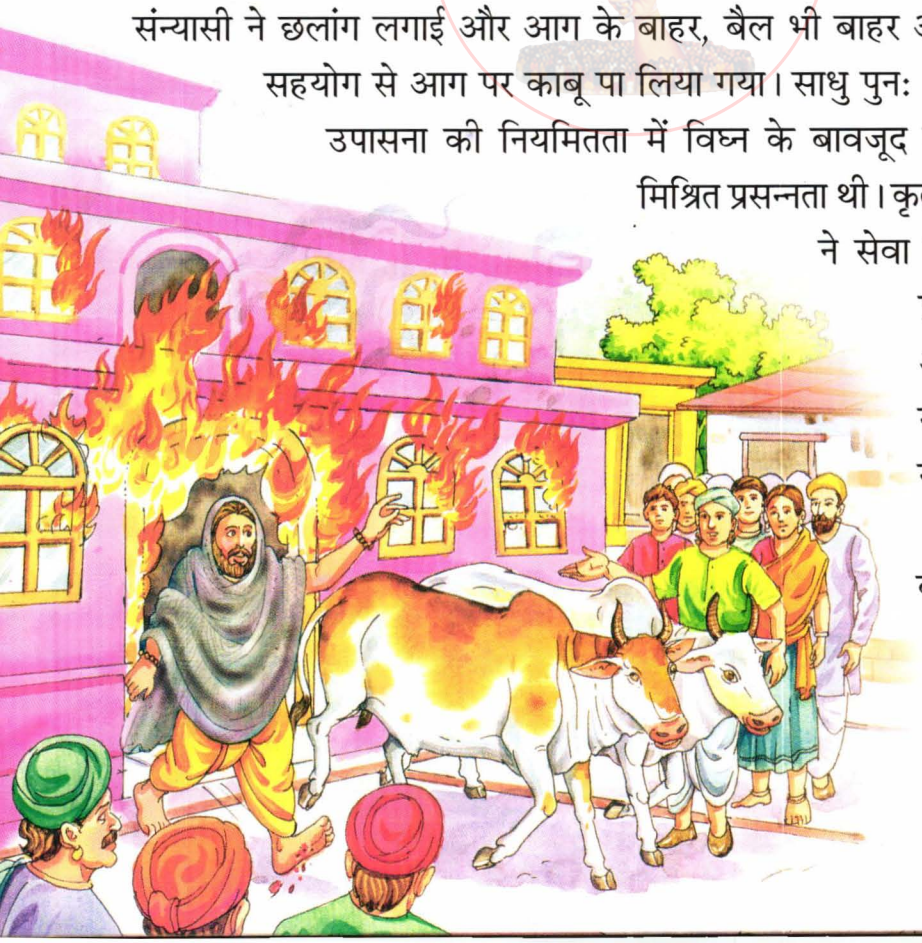

यह संन्यासी थे—बाबा राघव दास।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुभाषचंद्र बोस का संकल्प

सुभाषचंद्र बोस के बचपन की घटना है। एक बार वे माँ के पास सो रहे थे। सुभाष अचानक ही रात में माँ की बगल से उठकर जमीन पर जा सोये। माँ के पूछने पर उन्होंने बताया—"आज अध्यापक जी कह रहे थे कि हमारे पूर्वज ऋषि-मुनि थे। वे जमीन पर सोते थे और कठोर जीवन जीते थे। मैं भी ऋषि बनूँगा। इसलिए कठोर जीवन का अभ्यास कर रहा हूँ।" माँ-बेटे की बात सुनकर पिताजी भी जाग गए। वे बोले—"बेटा, जमीन पर सोने से ही कोई ऋषि नहीं बन जाता। ऋषि बनने के लिए ज्ञान प्राप्त करना होता है। दूसरों की सेवा में लगना भी जरूरी है। तुम बड़े होने पर ये तीनों काम करना। अभी तो तुम माँ के पास सो जाओ।"

सुभाषचंद्र ने पिता की इस बात को भी गहराई से मन में समझ लिया। वे खूब मेहनत से पढ़े। बड़े होकर उन्होंने आई. सी. एस. की ऊँची परीक्षा पास की। उनके सामने अफसर बनने की बात आई। सुभाष जी ने दृढ़ शब्दों में कहा—"मैं अपने जीवन का लक्ष्य बचपन में ही निश्चित कर चुका हूँ। मैं मातृभूमि की सेवा करूँगा।" उन्होंने अपने संकल्प का मृत्यु तक पालन किया।

ऐसे होते हैं महामानव! उनका चिंतन
बचपन से ही ऊँचा और
महान होता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

असली पुण्य

कुशीनगर का राजा लोगों के पुण्य खरीदने के लिए प्रसिद्ध था। उसने तराजू लगा रखी थी। पुण्य बेचने वाले अपनी ईमानदारी की कमाई का विवरण लिखकर एक पलड़े में रखते। उस कागज के अनुरूप तराजू स्वयं स्वर्ण मुद्राएँ देने की व्यवस्था कर देती।

जयनगर पर शत्रुओं का आक्रमण हुआ और वहाँ के राजा को स्त्री-बच्चे समेत रात्रि के अंधेरे में भागना पड़ा। पास में कुछ न था। वे मार्ग व्यय तक के लिए कुछ साथ लेकर न चल सके।

दूर पहुँचने पर एक वृक्ष की छाया में बैठकर राजा-रानी विचार करने लगे कि अगले दिनों उदरपूर्ति किस प्रकार होगी? रानी ने सुझाया—"आपने जीवनभर बहुत दान-पुण्य किया था, उसी में से थोड़े से कुशीनगर नरेश को बेचकर धन प्राप्त कर लिया जाए।"

राजा सहमत हो गए पर भूखे पेट कुशीनगर तक पहुँचा कैसे जाए? रानी को एक उपाय सूझा, बोली—"ग्रामीणों के घरों में जाकर आटा पीसूँगी और नित्य के खाने में से जो बचेगा उसे जमा करती जाऊँगी। राजा रोटी बनाएँगे।"

राजा उस दिन रोटी सेंक रहे थे। उन्हें अभ्यास तो था नहीं सो वे कई जगह से अपने हाथ जला भी चुके थे। भोजन के पूर्व ही एक भिखारी वहाँ आ पहुँचा। उसने जब हाथ फैलाक रोटी माँगी तो राजा हतप्रभ रह गए। अगर यह भी दे दिया तो खाएँगे क्या? खाएँगे नहीं तो दूसरे राज्य कैसे पहुँचेंगे?

रानी मदद को सामने आईं। बोलीं—"हम एक दिन और भूखा रह लेंगे, पहले इसे रोटी दो।" रानी की सलाह पर राजा ने सारी रोटियाँ उसे दे दीं और पूरा परिवार आगे चल पड़ा भूखे पेट।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मार्ग में पेट भरने लायक आटा हो गया तो उसे लेकर राजा बनाते-खाते दस दिन में कुशीनगर पहुँचे। राजा को अपना अभिप्राय सुनाया। उत्तर मिला—"धर्मकाँटे पर चले जाइए, जो ईमानदारी का कमाया हो, उसे एक पलड़े में रख दीजिए। काँटा आपको उसी आधार पर स्वर्ण मुद्राएँ दे देगा।" जयनगर के राजा ने अपने पुराने पुण्य स्मरण किए और उनमें से कई का विवरण काँटे के पलड़े में रखा पर उससे कुछ भी न मिला। उपस्थित पुरोहित ने कहा—"आपने परिश्रमपूर्वक जो कमाया और दान किया हो उसी का विवरण लिखें।"

राजा को पिछले दिनों भिखारी को दी हुई रोटियाँ याद आईं। उनने उसका ब्योरा लिखकर तराजू में रखा। दूसरे पलड़े में उसके बदले में सौ मुद्राएँ गिन दीं।

पुरोहित ने कहा—"उसी दान का पुण्य फल होता है जो ईमानदारी और परिश्रमपूर्वक स्वयं कमाया गया हो।" राजा ने रानी को उस दिन की सलाह के लिए धन्यवाद दिया। इसके कारण ही उन्हें पुण्य का सही अर्थ ज्ञात हो सका और प्रतिफल मिल सका।

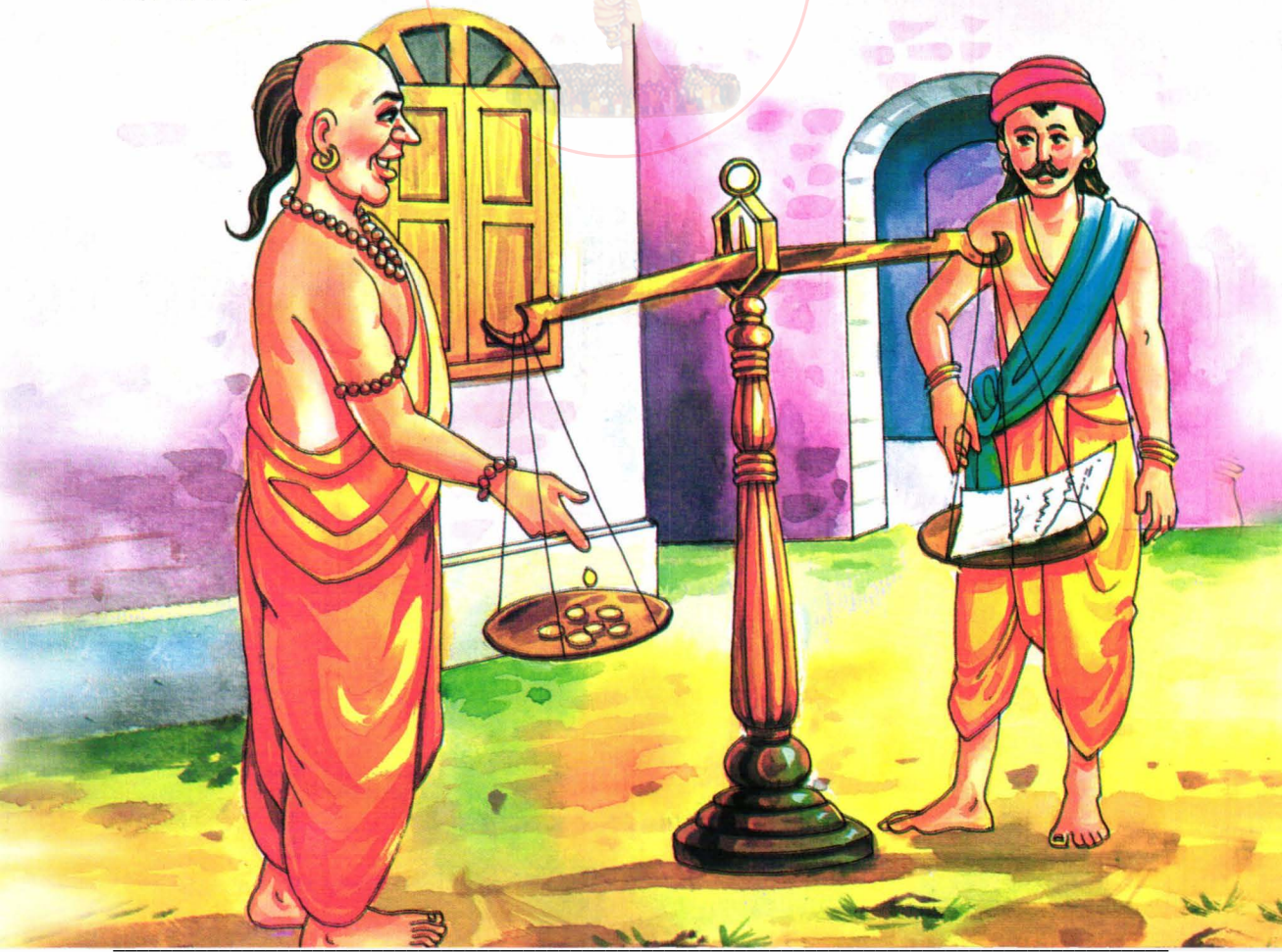

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साथी की रक्षा

एक बार जब विवेकानंद बालक थे अपने साथियों के साथ मेला देखकर आ रहे थे। रास्ते में उनका एक साथी एक ताँगे के सामने इस प्रकार आ गया कि उसको दबते देखकर सभी चीख-पुकार करने लगे। परंतु कोई सहायता के लिए आगे नहीं आया।

तभी विवेकानंद बिजली की तरह दौड़कर घोड़े के सामने इस प्रकार खड़े हो गए कि सहसा घोड़ा एक तरफ मुड़ गया और वह अपने साथी को खींचकर किनारे ले आए।

विवेकानंद बचपन से ही बहुत बहादुर तथा सेवाभावी थे।

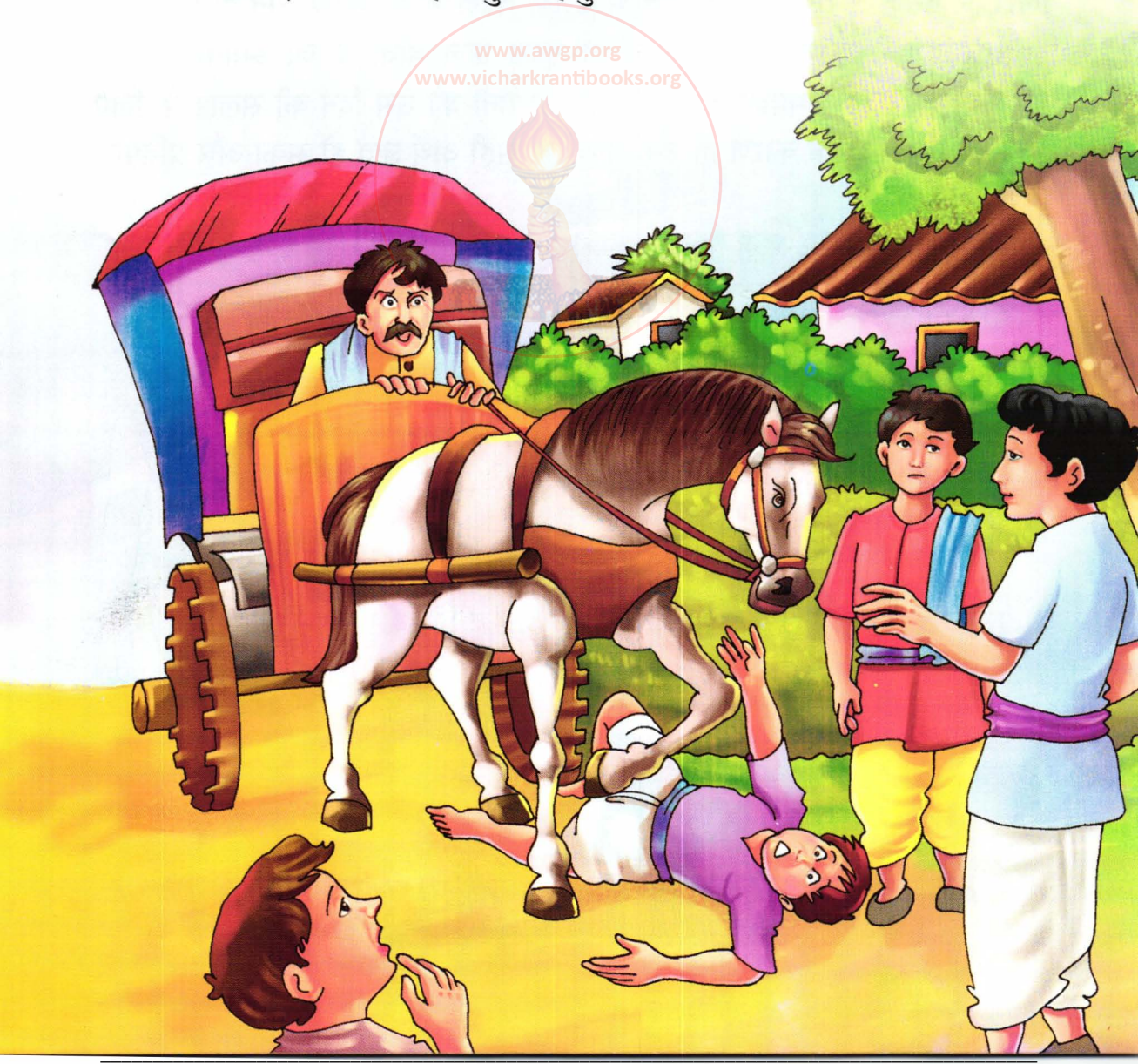

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org